तिब्बत देश

बाबूगीरी का खेल : नालंदा विवि चीन के चरणों में

पिछले दिनों वरिष्ठ भारतीय पत्रकार और इंडियन एक्सप्रेस के प्रधान संपादक शेखर गुप्ता ने भारतीय राजनीति में कम्युनिस्टों की भूमिका का एक नायाब विश्लेषण पेश किया। उनका कहना है कि भारत में जब–जब कम्युनिस्ट पार्टियों की अपने प्रभाव वाले राज्यों में हालत पतली होती है तब–तब उनके कामरेड बुद्धिजीवी मुफ्तखोर चूहों की तरह अपने डूबते जहाज को छोड़कर कांग्रेस के जहाज पर सवार हो जाते हैं। वहां जाकर वे न केवल सत्ता के लड्डू खाते हैं बल्कि कांग्रेस के नीतिगत फैसले करने वाले तंत्र पर भी कब्जा जमा लेते हैं। पंडित नेहरू और इंदिरा गांधी के उदाहरण देते हुए उन्होंने यह भी बताया है कि हर बार इन लोगों की वजह से कांग्रेस और देश को भारी नुकसान हुआ लेकिन फिर भी कांग्रेसी नेता पिछले अनुभव से सीखने को तैयार नहीं हैं।

पिछले एक साल में प. बंगाल और केरल में मार्क्सवादियों की लुटिया डूबने के बाद जिस तरह प्रधानमंत्री के मीडिया सलाहकार से लेकर राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद तक कम्युनिस्टों की घुसपैठ का नया सिलसिला शुरू हुआ है उसे देखते हुए अब लग रहा है कि इतिहास एक बार फिर खुद को दोहराने जा रहा है। इसका एक ताज़ातरीन उदाहरण राज्यसभा द्वारा पारित वह प्रस्ताव है जिसके तहत भारतीय संस्कृति के सबसे बड़े प्रतीक नालंदा विश्वविद्यालय का पुनरोद्धार करने का फैसला किया गया है। देरी केवल लोकसभा की मुहर लगने की है। उसके बाद नालंदा विवि को फिर से जीवित करने के नाम पर इसे चीन सरकार के प्रोपेगेंडा केंद्र का रूप देने के लिए चीन की गोद में सौंप दिया जाएगा।

नालंदा विश्वविद्यालय को एक जमाने में भारतीय संस्कृति के सबसे बुलंद अंतर्राष्ट्रीय झंडे की तरह देखा जाता था जहां भारतीय संस्कृति और ध र्म, खासकर बौद्ध दर्शन का अध्ययन करने के लिए दुनिया भर के विद्वान आते थे। लेकिन विदेशी हमलावर बख्तियार खिलजी ने सन् 1197 में भारतीय पहचान के प्रतीकों को नष्ट करने के अपने अभियान के तहत इस विश्वविद्यालय को आग लगाकर उसे हमेशा के लिए नष्ट कर दिया था। बिहार के नालंदा जिले में इंद्रपुष्करिणी नदी के किनारे इसके खंडहर आज भी इसकी विशालता और भव्यता की दर्दनाक गवाही देते हैं।

'नालंदा यूनिवर्सिटी बिल – 2010' नाम से राज्यसभा द्वारा पारित इस प्रस्ताव की कई बातें चौंकाने वाली हैं। सबसे ज्यादा हैरानी की बात तो यह है कि एक विशुद्ध सांस्कृतिक और शिक्षा संबंधी मुद्दा होने के बावजूद इस बिल को संस्कृति या शिक्षा मंत्रालय नहीं बल्कि भारत के विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने तैयार किया है। दुर्भाग्य से यह वही मंत्रालय है जिसे भारत की पहचान और हितों की रक्षा के लिए कम मगर लापरवाह ऐय्याशी तथा लगभग हर मामले में चीन और पाकिस्तान जैसे प्रतिस्पर्द्धियों के आगे घुटने टेकने के लिए ज्यादा जाना जाता है। दूसरी बात यह है कि विवि के बनने से पहले ही कामरेड अमर्त्य सेन की अध्यक्षता और चीन के एक सरकारी प्रोफेसर जैसे घोर चीन समर्थक देशी विदेशी कामरेडों से भरी हुई समिति ने इसका संचालन भी शुरू कर दिया है। दिल्ली विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की एक अनजान वामपंथी अध्यापिका प्रो गोपा सभरवाल को इस विवि की 'उपकुलपति' भी तैनात कर दिया गया है। उनका न तो संस्कृति, धर्म और बौद्ध दर्शन से कोई नाता है और न उन्हें समाजशास्त्र में किसी विशेष विद्वत्ता भरे योगदान के लिए जाना जाता है। खुद कामरेड अमर्त्य सेन भी भले ही अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार के कारण सम्मान योग्य हैं, पर उन्हें बौद्ध दर्शन के सर्वोच्च प्रतीक नालंदा विवि की किस्मत तय करने वाला 'ज्ञानी' मानना एक सस्ते मजाक से ज्यादा नहीं होगा।

विदेशी एजेंटों और देशी अज्ञानी भांडों के बूते पर नालंदा विवि को फिर से 'जीवित करने' का यह हास्यास्पद अभियान एक ऐसे देश में चलाया जा रहा है जहां बौद्ध दर्शन और भारतीय संस्कृति के सैंकड़ों दिग्गज मौजूद हैं और इसी विषय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर का ऐतिहासिक योगदान कर रहे लगभग एक दर्जन से ज्यादा विवि और संस्थान चल रहे हैं। इस बिल को तैयार करने वाले विदेश मंत्रालय के बाबू यह भूल गए कि देश में पहले से नव नालंदा महाविहार चल रहा है जिसे नालंदा विवि की परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए बिहार सरकार ने 1951 में शुरू किया था। इसकी नींव पूर्व राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद ने रखी थी और 1956 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इसे देश को समर्पित किया था। यह विवि अपने अति सीमित साधनों और सरकारी उपेक्षा के बावजूद भिक्खु जगदीश कश्यप और प्रो. सतकरी मुखर्जी जैसे विद्वानों के नेतृत्व में दर्जनों ग्रंथ प्रकाशित कर चुका है।

नव नालंदा महाविहार के अलावा गंगतोक, सारनाथ, धर्मशाला और लेह में भी कम से कम चार ऐसे विश्वविद्यालय चल रहे हैं जिन्हें केंद्रीय विवि अनुदान आयोग मान्यता और सहयोग देता है तथा जिन्होंने नालंदा की परंपरा पर भारतीय और बौद्ध दर्शन के अध्ययन में ऐतिहासिक योगदान दिया है। इनमें से दलाई लामा की पहल पर स्थापित सारनाथ के उच्च तिब्बती अध्ययन केंद्र ने तो नालंदा से तिब्बत में गए 100 से ज्यादा ऐसे महत्वपूर्ण भारतीय ग्रंथों को नए सिरे से संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी में पुनर्जीवित करने का श्रेय हासिल किया है जिनके बारे में यह मान लिया गया था कि वे हमेशा के लिए नष्ट हो चुके हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से भारतीय विदेश मंत्रालय को इन संस्थानों या विद्वानों की जानकारी नहीं है। मंत्रालय पर उसकी बाबू बिरादरी का एक ऐसा वर्ग लगातार अपना शिकंजा कसे हुए है जो भारत के हितों से कहीं ज्यादा चीन की चिंताओं को महत्व देने में विश्वास रखता है। यही वह वर्ग है जो भारत की चीन नीति को भारत के हितों के बजाए चीन की मिजाजपुर्सी के अनुकूल बनाए रखने में अपना जोर लगाता आया है। भले ही पूरी दुनिया दलाई लामा को बौद्ध धर्म का सबसे बड़ा और सम्मनित प्रतिनिधि मानती हो पर चीन सरकार को खुश रखने को लालायित भारतीय बाबुओं का यह वर्ग दलाई लामा को अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलनों में भाग लेने से रोकने की सीमा तक जाने को भी तैयार रहता है। यही वह वर्ग है जो तिब्बत और दलाई लामा जैसे नाजुक विषयों पर भारत की चीन नीति निर्धारित करता है। इसी बिरादरी के कहने पर भारत के प्रधानमंत्री अपनी चीन यात्रों के दौरान घुटने टेक कर तिब्बत को चीन का अंतरंग हिस्सा मानने वाली घोषणाएं करते हैं। लेकिन जवाब में सिक्किम और अरूणाचल प्रदेश पर चीन की धमकियों को 'अंडरस्टैंडेबल' मानकर ये बाबू लोग भारत सरकार को आक्रामक रवैया अपनाने से रोकते हैं। इसी बिरादरी की पहल पर नालंदा विवि बिल को तैयार करने की जिम्मेदारी संस्कृति या शिक्षा मंत्रालय के बजाए विदेश मंत्रालय को दिया गया और यह काम चीन समर्थकों से भरी एक समिति को सौंप दिया गया।

प्रस्तावित नालंदा विवि के कामकाज और भूमिका तय करने वाली समिति के अध्यक्ष कामरेड अमर्त्य सेन ने स्पष्ट कर दिया है कि, ''यह विश्वविद्यालय चीन के साथ व्यापक तालमेल करेगा और चीन में इसकी व्यापक मार्केटिंग की जाएगी क्योंकि चीन एक ऐसा देश हैं जहां दुनिया के सबसे ज्यादा बौद्ध रहते हैं।'' ऐसा नहीं कि कामरेड अमर्त्य सेन को इस बात की जानकारी नहीं कि चीन सरकार ने पिछले साठ साल में बौद्ध धर्म की क्या हालत की है या फिर नालंदा जैसे विषयों पर चीन सरकार और दलाई लामा में से किसका रुतबा ऊपर है? एक भारतीय कम्युनिस्ट होने के नाते चीन के प्रति उनकी आस्था और सांस्कृतिक दिवालिएपन को समझा जा सकता है। पर असली सवाल तो सरकार की समझदारी पर उठता है जिसने यह काम विदेश मंत्रालय और उसके चीन परस्त कारिंदों को सौंप दिया। या फिर राज्यसभा के उन सांसदों पर जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक पहचान और इतिहास से जुड़े इतने महत्वपूर्ण सवाल पर आंख मूंद कर अपना ठप्पा लगा दिया।

– विजय क्रान्ति

चीन ने स्वायत्तशासी क्षेत्र में चौथे नागरिक हवाई अड्डे की शुरुआत की

कर्मा के भाई रिनछेन सामद्रुप एक पर्यावरण संबंधी गैर सरकारी संगठन पर्वतीय गोंजो काउंटी में चलाते हैं, जो सिचुआन प्रांत के समीप तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में है। उनके संगठन ने करीब 1700 स्थानीय ग्रामीणों को पेड़ों की अवैध कटाव रोकने तथा पुनः वनीकरण के काम के लिए लामबंद किया था। उनके वकील ने समाचार एजेंसी रॉयटर को बताया कि उन पर दलाई लामा समर्थक एक आलेख अपने वेबसाइट पर प्रकाशित करने का आरोप लगाया गया है।

(फायुल डॉट कॉम, धर्मशाला, 1 जुलाई)

चीन ने गुरुवार को तथाकथित तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र में अपने चौथे नागरिक हवाई अड्डे की शुरुआत कर दी है। इस हवाई अड्डे का नाम गुंसा एयरपोर्ट है और यह गारी प्रशासनिक क्षेत्र में बनाया गया है। गुरुवार को एयर चाइना का पहला विमान इस हवाई अड्डे पर उतरा। यह इस क्षेत्र का चौथा व्यावसायिक हवाई अड्डा होगा।

चीन के सरकारी न्यूज एजेंसी के अनुसार पड़ोसी प्रांत सिचुआन की राजधानी चेंगदू से उड़ान भर कर एयर बस 319 नये हवाई अड्डे पर सुबह 10:20 बजे उतरा। यह हवाई अड्डा समुद्रतल से 4,200 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसके रनवे की लंबाई 4,500 मीटर है और 2020 तक इस हवाई अड्डे से सालाना तौर पर कुल 1,20,000 यात्री यात्रा कर सकेंगे।

तिब्बतम स्वायत्तशासी क्षेत्र में पहले से ही तीन हवाई अड्डे हैं–ल्हासा में गोंगार हवाई अड्डा, चमदो में बामदा हवाई अड्डा, और निंगची हवाई अड्डा। इसके अलावा पांचवां हवाई अड्डा भी शिगात्से में अक्तूबर से काम करना शुरू कर देगा जिसे 'पीस एयरपोर्ट' कहा जा रहा है।

एयर चाइना के प्रवक्ता बाओ लिदा ने बताया कि एयर चाइना की उड़ान हर मंगलवार और शुक्रवार को चेंगदू से ल्लासा होते हुए नगारी हवाई अड्डे तक की होगी। आईएएनएस ने प्रवक्ता के हवाले से बताया है कि चेंगदू से नगारी की दूरी 2,300 किलो मीटर है। चेंगदू से एयरचाइना का विमान सुबह 5:50 बजे उड़ान भर कर 8:40 बजे ल्हासा उतरेगा और फिर वहां से उड़ान भर कर 10:20 बजे नगारी उतरेगा।

चीन ने कहा कि चार साल पहले शुरु किए गए तिब्बत को रेलवे लाइन और हवाई मार्ग से चीन के प्रमुख शहरों से जोड़ने के अभियान का मकसद यहां विकास को बढ़ावा देना है। हालांकि तिब्बत में चीन की गतिविधियों पर नजर रखने वालों का मानना है कि यहां चीन की गतिविधियों से स्थानीय नागरिकों को कोई फायदा नहीं मिल रहा है। सारा फायदा यहां चीनियों की बढ़ती आबादी को मिल रहा है। चीन की साम्यवादी सरकार अपने औद्योगिक विकास के लिए कच्चे माल और ऊर्जा की जरूरतों की पूर्ति के लिए तिब्बत के समृद्ध संसाधनों का उपयोग कर रही है। चीन की एक पार्टी वाली सरकार में तिब्बतियों की आवाज को सुनने वाला कोई नहीं है और तिब्बत के निर्वासित समूहों को मानना है कि चीन धीरे धीरे तिब्बत की सांस्कृतिक पहचान मिटाने की कोशिश कर रहा है।

दूसरे पर्यावरणविद भाई को भी पांच साल कैद की सजा

(फायुल डॉट कॉम, धर्मशाला, 3 जुलाई)

चीन ने हाल में कैद किये गए तिब्बती पर्यावरणविद कर्मा सामद्रुप के भाई को भी पांच साल की सजा सुना दी। इस सजा के साथ तीन साल के लिए उन्हें 'देश विभाजन की भावना को उकसाने के आरोप में' राजनीतिक अधिकारों से भी वंचित कर दिया।

कर्मा के भाई रिनछेन सामद्रुप एक पर्यावरण संबंधी गैर सरकारी संगठन पर्वतीय गोंजो काउंटी में चलाते हैं, जो सिचुआन प्रांत के समीप तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में है। उनके संगठन ने करीब 1700 स्थानीय ग्रामीणों को पेड़ों की अवैध कटाव रोकने तथा पुनः वनीकरण के काम के लिए लामबंद किया था। उनके वकील ने समाचार एजेंसी रॉयटर को बताया कि उन पर दलाई लामा समर्थक एक आलेख अपने वेबसाइट पर प्रकाशित करने का आरोप लगाया गया है। उनके पास अपील करने के लिए दस दिन हैं।

24 जून को उनके भाई कर्मा सामद्रुप (जो एक धनी व्यापारी और पर्यावरणविद हैं) को प्राचीन मकबरों को खोदने और लूटने के आरोप में पंद्रह साल की सजा सुनायी गयी, जबकि यह आरोप करीब एक दशक पहले ही उन पर से हटा लिया गया था।

रिनछेन सामद्रुप और चाइमे नामग्याल, दोनों पर्यावरणविद हैं और कर्मा सामद्रुप ने सार्वजनिक तौर पर चीनी अधिकारियों की निंदा की है कि वे चामडा इलाके में लुप्तप्राय प्रजातियो का शिकार करते रहे हैं। चाइमे नामग्याल अभी 21 महीनों की सश्रम कैद भुगत रहे हैं। हालांकि निर्वासित तिब्बती और समर्थक कहते हैं कि रिनछेन पर गलत आरोप लगाये गये हैं कि 'उन्होंने चामडो प्रशासन की पारिस्थितकी, पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधन और धर्म से जुड़ी सामग्रियों को तीन डिस्क में अवैध रूप से संचय किया, विदेश में दलाई लामा के गुट से प्रतिक्रियावादी दुष्प्रचार सामग्री अवैध रूप से हासिल की और अवैध प्रकाशन 'फॉरबिडेन माउंटेन, प्रोहिबिटेड हंटिंग' के लिए सामग्री व फोटोग्राफ की आपूर्ति की।' रिनछेन सामद्रुप को चीन के पर्यावरण मंत्रालय की वेबसाइट पर प्रकाशित एक आलेख मे 'पर्यावरण संरक्षक और शांतिवादी' के बतौर सराहना मिली थी। रिनछेन को 2006 में फोर्ड मोटर कंपनी संरक्षण तथा चीन के पर्यावरण संक्षरण की तरफ से अनुदान मिला है, साथ ही उन्हें जेट ली के वन वर्ल्ड फाउंडेशन से भी सम्मान हासिल हुआ है।

चीन ने अपने प्रधानमंत्री से संबंधित विवादास्पद किताब का प्रकाशन रोका

(न्यूयार्क टाइम्स, बीजिंग, 7 जुलाई)

चीन द्वारा गिरफ्तार किये गये एक बेहद लोकप्रिय लेखक और लोकतंत्र समर्थक ने बताया कि सुरक्षा एजेंटों ने उस किताब को प्रकाशित नहीं करने की धमकी दी है, जिसमें चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की आलोचना की गयी है। यू जी नामक इस लेखक ने एक टेलीफोन इंटरव्यू में बताया कि वह इस पुस्तक (जिसका शीर्षक है 'चाइनाज बेस्ट एक्टर : वेन जिआबाओ') को प्रकाशित करने का पूरा इरादा रखते हैं। चूंकि इसे मूल चीन देश में प्रतिबंधित कर दिया गया है, इसलिए वह इसे हांगकांग से प्रकाशित कराना चाहते हैं। 36 वर्षीय यू ने बताया कि सोमवार को पुलिस अफसरों और राजनीतिक असंतुष्टों से निबटने में माहिर माने जानेवाले बीजिंग पुलिस ब्यूरो के अधिकारियों ने उन्हें हिरासत में लेकर चार घंटे तक पूछताछ की। एक सुरक्षा एजेंट ने मुझे बताया कि 'वेन जियाबाओ कोई साधारण आदमी नहीं हैं। इसलिए उनके खिलाफ कोई आलोचना देश की सुरक्षा और राष्ट्रीय हितों के खिलाफ मानी जायेगी। और यदि आपने अब भी इसके प्रकाशन का इरादा रखा, तो आपका भी हश्र लियू झियाबो जैसा होगा, जो वर्षो से कैद में यातना झेल रहे हैं।' लियू भी एक लेखक व अधिकारों के लिए लड़नेवाले कार्यकर्ता हैं, जिन्हें बीते दिसंबर में गिरफ्तार कर ग्यारह साल की कैद सुनायी गयी। उन पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का शासन खत्म करने और लोकतांत्रिक सुधारों के लिए आंदोलन चलाने का आरोप लगाया गया था। इधर यू को पूछताछ के बाद छोड़ दिया गया, लेकिन वह बताते हैं कि यकीन के साथ नहीं कह सकते कि सुरक्षा एजेंट की धमकी गंभीर है या खोखली, पर वह अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए कैद हो जाना पसंद करेंगे। उन्होंने कहा, 'एक लेखक के रूप में अभिव्यक्ति की आजादी को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानता हूं, जिसके बिना मैं एक ऐसा लाश हो जाउंगा, जिसका न तो कोई मूल्य होता है और न मतलब।' गौरतलब है कि यू ने 28 किताबें लिखी हैं और एक समय चीन के सर्वप्रिय लेखक थे, लेकिन उनके राजनीतिक विचारों के कारण उनकी किताब पर प्रतिबंध लगने लगा है। उनकी नयी किताब का शीर्षक बेस्ट एक्टर हॉलीवुड के अकादमी पुरस्कारों से प्रेरित उपमेय है, जिससे आलोचकों ने वेन जिआबाओ को विभूषित कर रखा है। लोकलुभावन शैली और चीनियों के लिए उनकी चिंता की अभिव्यक्ति ने जिआबाओ को पसंदीदा नेताओं में शुमार जरूर करा दिया है, लेकिन यू और उनके जैसे आलोचक दलील देते हैं कि उनकी यह छवि चीन के निरंकुश नेतृत्व का का महज एक मुखौटा है।

निर्वासित तिब्बती सरकार ने कहा चीन अगला दलाई लामा नहीं चुन सकता

(एओएल 3 जुलाई, 2010)

तिब्बत की निर्वासित सरकार ने चीन के उस बयान पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है, जिसमें उसने कहा है कि दलाई लामा के निधन होने पर वह उनके उत्तराधिकारी का चयन करेगा। जिनेवा में दलाई लामा के प्रतिनिधि सोतेन सामद्रुप छोक्यापा ने एओएल न्यूज को बताया कि 'न तो तिब्बत में रह रहे तिब्बती और न ही बाहरी दुनिया में रह रहे तिब्बती चीन द्वारा नियुक्त किसी दलाई लामा को मान्यता प्रदान करेंगे।' 'दलाई लामा तिब्बती लोगों का आध्यात्मिक और राजनीतिक रूप से नेतृत्व करने के लिए होते हैं, मगर चीन द्वारा नियुक्त किसी भी लामा का एकल गुप्त एजेंडा होगा– तिब्बती लोगों को नियंत्रित करना।'

बीते चार सौ वर्षों से तिब्बत दलाई लामा के रूप में पूज्य कई ऐसे लोगों के नेतृत्व में रहा है, जो बोधिसत्व यानी निर्वाण प्राप्त ज्ञानी व्यक्ति होते हैं। वर्तमान और लामा परंपरा में 14वें दलाई लामा (तेनजिंग ग्यात्सो) को चीनी शासन के विरूद्ध एक असफल विद्रोह के बाद 1959 में निर्वासन के लिए विवश होना पड़ा था। तब से उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए सीमित तौर पर स्वायत्तता हेतु शांतिपूर्ण तरीके से अभियान छेड़ रखा है। हालांकि चीन उन्हें एक ऐसे हिंसक आतंकवादी के रूप में पेश करते हुए रोष जताता रहा है, जो तिब्बत में सामंतवाद की वापसी कराएगा और चीन जनवादी गणतंत्र को विभाजित करेगा। गुरुवार को कम्युनिस्ट पार्टी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने विदेशी पत्रकारों के सामने यह स्पष्ट किया के कैसे चीन भावी दलाई लामाओं को तेनजिंग ग्यात्सो की तरह परेशानी खड़ा करने से रोकेगा। अब से लामा के पुर्नअवतार का चुनाव, जिसे चीन में जीवित बुद्ध के रूप में जाना जाता है, एक तय प्रक्रिया के अनुरूप होगा और इस पर अंतिम मुहर बीजिंग से लगेगी।

तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के उपाध्यक्ष और पार्टी मे उपसचिव हाओ पेंग ने न्यूयॉर्क टाइम्स को बताया कि 'अगर आप तिब्बत के इतिहास की समझ रखते हैं, तो आपको पता चलेगा कि तिब्बती बौद्धवाद परंपरा में जीवित बुद्ध के पुर्नअवतार के लिए सख्त ऐतिहासिक और धार्मिक रीति–रिवाज रहे हैं। और यह काफी प्राचीन क्विंग राजवंश के समय से ही निर्धारित होता था।' हावो के

उनके खिलाफ कोई आलोचना देश की सुरक्षा और राष्ट्रीय हितों के खिलाफ मानी जायेगी। और यदि आपने अब भी इसके प्रकाशन का इरादा रखा, तो आपका भी हश्र लियू झियाबो जैसा होगा, जो वर्षो से कैद में यातना झेल रहे हैं।' लियू भी एक लेखक व अधिकारों के लिए लड़नेवाले कार्यकर्ता हैं, जिन्हें बीते दिसंबर में गिरफ्तार कर ग्यारह साल की कैद सुनायी गयी।

आज भी तिब्बतियों के पास वाजिब तर्क है कि वे गोल्डन उर्न जैसे शाही राज्यादेश के तर्ज पर किसी चुनाव प्रक्रिया को खारिज करें। जब मई, 1995 में दलाई लामा ने घोषणा की कि तिब्बत के भीतर ही अन्वेषण के जरिये पंचेन लामा (दलाई लामा के बाद तिब्बती बौद्धवाद में दूसरे सबसे प्रमुख धार्मिक नेता) के 11वें पुनर्अवतार का पता लगा लिया है, तब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकारियों ने गोल्डन उर्न प्रक्रिया का इस्तेमाल कर अलग 'आत्मा के पुनःअवतरण' के खोजे जाने की बात कही।

अनुसार नये धार्मिक नेता के चुने जाने की प्रक्रिया कुछ इस तरह से कार्यरूप में होती है : 'पवित्र आत्मा वाले बच्चों (जिन्हें वरिष्ठ भिक्षुओं का संभावित अवतार माना जाता है) के नाम को एक छड़ी से जोड़ा जाता है और इसे एक पुराने पवित्र पात्र, जिसे एक सुनहरे कलश (गोल्डेन उर्न) के नाम से जाना जाता है, में रखा जाता है। भिक्षु छड़ी उठाते हैं और केंद्रीय सरकार से इस पसंद पर अंतिम मुहर लगाने को कहते हैं। ;साल 2007 में अधिकारियों ने गुप्त रूप से एक नियम पर अमल किया, जिसके तहत घोषित किया गया कि 'जीवित बुद्ध का पुर्नअवतार बिना सरकार की अनुमति व सहमति के अवैध और अमान्य है। यदि सरकार कहती है–'हां', तब ही किसी बालक या बालिका को दलाई लामा के पुर्नअवतार के रूप में मान्यता मिलती है।

लेकिन बहुत से तिब्बती बौद्धवादी नहीं मानते कि गोल्डन उर्न सच्चे अर्थों में चुनाव विधि का तरीका है। ऐसा इसलिए कि यह प्रणाली 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में ही चीनी सम्राट क्यानलॉन्ग के आदेश स्वरूप सामने लायी गयी थी। क्यानलॉन्ग ही वह शासक था, जो तिब्बत देश में अपना प्रभाव स्थापित करना चाहता था। और जब तिब्बत में चीनी प्रभाव क्षीण पड़ गया तो स्थानीय तिब्बती वापस आत्मा संबंधी विधानों का प्रयोग करने लगे। 1858 के बाद से गोल्डन उर्न के तर्ज पर कोई दलाई लामा नहीं चुना गया है।

आज भी तिब्बतियों के पास वाजिब तर्क है कि वे गोल्डन उर्न जैसे शाही राज्यादेश के तर्ज पर किसी चुनाव प्रक्रिया को खारिज करें। जब मई, 1995 में दलाई लामा ने घोषणा की कि तिब्बत के भीतर ही अन्वेषण के जरिये पंचेन लामा (दलाई लामा के बाद तिब्बती बौद्धवाद में दूसरे सबसे प्रमुख धार्मिक नेता) के 11वें पुर्नअवतार का पता लगा लिया है, तब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकारियों ने गोल्डन उर्न प्रक्रिया का इस्तेमाल कर अलग 'आत्मा के पुनःअवतरण' के खोजे जाने की बात कही। अचरज की बात नहीं कि उर्न से छड़ी निकाल कर बीजिंग के पसंदीदा लामा (दो कम्युनिस्ट पार्टी सदस्यों के छह वर्षीय बच्चे) ग्येनकेन नोर्बू को चुना गया। ;कई पर्यवेक्षकों ने पाया कि यह छड़ी परंपरागत छड़ी से ज्यादा लंबी थी। पंचेन लामा की जगह अवतार वाले छह वर्षीय बच्चा, जिसका चुनाव दलाई लामा ने किया था, उसी साल अपने परिवार सहित गायब हो गया। छोक्यापा बताते हैं कि 'वह अब 21 साल का होगा। हमलोग अविस्मरणीय ढंग से उनके बारे में चिंतित हैं, जब से उनकी परिवार समेत गिरफ्तारी हो गयी थी तब से अब तक हमें उनके बारे में कुछ पता नहीं चल पाया है। कई तिब्बती बीजिंग अनुमोदित पंचेन लामा (जिनकी शिक्षा आदि चीन में हुई और उन्हें धार्मिक अवसर पर सामने लाया गया) को कम्युनिस्ट पार्टी की कठपुतली मानते हैं। छोक्यापा कहते हैं –'मुझे लगता है कि उनकी सेवा में लगे चंद तिब्बतियों को छोड़ दें तो उन्हें तिब्बत के भीतर बहुत सम्मान से नहीं देखा जाता। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कौन हैं, लेकिन तथ्य यह है कि चीनियों ने उनका चुनाव किया है।'

पंचेन समस्या की पुनरावृत्ति रोकने के लिए 14वें दलाई लामा (जो अगले सप्ताह 75 साल के होने वाले हैं) और उनके साथ निर्वासित साथी अब समीक्षा कर रहे हैं कि कैसे परंपरा अनुरूप 15वें धार्मिक गुरू का चुनाव किया जाना चाहिए। उन तरीकों पर विचार विमर्श चल रहा है कि लामा के उत्तराधिकार को चीन हाइजैक न कर सके और दलाई लामा को अपनी मृत्यु से पहले अपने उत्तराधिकारी का चुनाव करने का मौका मिले या फिर यह शक्ति चुने हुए वरिष्ठ भिक्षुओं के एक निकाय को सौंप दी जाये।

छोक्यापा आगे बताते हैं, "यह संभव है कि दलाई लामा यह निणर्य ले सकते हैं कि उनका उत्तराधिकारी तिब्बत के बाहर का होगा। ऐसा पहले हो चुका है, चौथे दलाई लामा मंगोलिया में और छठे लामा भारत में अवतरित हुए। दलाई लामा ने 1959 में तिब्बत छोड़ दिया, क्योंकि चीन ने उन्हें तिब्बतियों का आध्यात्मिक व राजनीतिक रूप से नेतृत्व करने से रोक दिया था। उन्होंने कहा था कि वह तब तक निर्वासन में रहेंगे, जब तक वह इस भूमिका को निभा सके। इसलिए जरूरी नहीं कि उनका पुर्नअवतार तिब्बत में पैदा हो, अगर उनकी इच्छा अभी तक पूरी नहीं हो सकी है।"

दलाई लामा का जन्मदिवस : सुरक्षा बलों ने उत्सव रोका

(डीपीए, 6 जुलाई 2010)

मंगलवार को नेपाल पुलिस ने सौ तिब्बती शरणार्थियों को दलाई लामा का 75वां जन्मदिवस मनाने से न सिर्फ रोका, बल्कि उन्हें गिरफ्तार कर लिया। हालांकि बाद में उन्हें छोड़ दिया गया। सरकार ने तिब्बती को अपने निर्वासित आध्यात्मिक नेता का जन्मदिवस सार्वजनिक स्थल पर मनाने से इसलिए रोका, क्योंकि नेपाली सत्ता तिब्बत को चीन का एक अभिन्न अंग मानती है।

काठमांडू जिला पुलिस प्रमुख रमेश खारेल ने बताया कि 'हिरासत में लिये गये लोगों को पूछताछ के बाद छोड़ दिया गया। वे अपने मठ में जन्मदिवस का उत्सव मना सकते हैं।' पुलिस ने तिब्बतियों को जिले के विविध इलाकों से होते हुए काठमांडू के ज्वालाखेल मैदान

जाकर जुलूस निकालने से रोका था। स्टूडेंट फॉर फ्री तिब्बत ग्रुप के एक सदस्य सेरिंग लामा ने कहा कि करीब तीन घंटे उत्सव मनाने में लगे। हमें नये रास्तों की तलाश करनी होगी, ताकि हम पुलिस को चकमा दे सकें।'कई तिब्बती उत्सव मनाने की प्रतीक्षा में भोर से ही घर से बाहर थे। बुजुर्ग और औरतें तो बारिश की परवाह नहीं करते हुए तय जगह पर पहुंच गए। काठमांडू में जन्मीं निर्वासित तिब्बती येशी वांग्मो बताती हैं। 'मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है क्योंकि मैं समारोह में भाग नहीं ले सकी। मुझे पुलिस ने चलता कर दिया।'

भिक्षुओं व भिक्षुणियों को भी काठमांडू स्थित मठ से निकलने से रोक दिया गया। हिमालयन टाइम्स ने खबर दी कि सरकार ने संविधान सभा के सदस्यों को एक निर्देश दिया कि वे जन्मदिवस समारोह में शिरकत न करें। विदेश मंत्रालय ने सभी पार्टियों को संदेश भेजा कि उनके कोई सदस्य भाग न ले पायें। नेपाल ने न सिर्फ राजधानी में चाकचौबंद सुरक्षा रखी, बल्कि साथ ही तिब्बत से लगे उत्तरी सीमा पर चौकस निगाह रखी। आधिकारिक तौर पर 20 हजार तिब्बत शरणार्थी नेपाल में रहते हैं।

चीन से सम्मानित तिब्बती पर्यावरणविद भाइयों को मुक्त करने का आग्रह

(फायूल.कॉम, धर्मशाला, 9 जुलाई)

प्रसिद्ध मानवाधिकार संगठन एमनेस्टी इंटरनेशनल ने गुरुवार को चीन से गुजारिश की कि वह जेल में बंद तीन पर्यावरणविद कार्यकर्ताओं, जिनमें से दो सगे भाई हैं औ लंबी कारावास झेल रहे हैं, को रिहा कर दे। चीन के सरकारी प्रसारण संगठन सीसीटीवी वर्ष 2006 में कर्मा सामद्रुप को नदी संरक्षण कार्य के लिए लोकहितैषी का सम्मान दिया था। लेकिन बीते 24 जून को उन्हें भग्नावशेषों से कुछ सांस्कृतिक अवशेषों को चुराने का आरोप लगाकर 15 साल के लिए जेल में डाल दिया गया। जबकि काफी पहले 1998 में उन पर लगे इस आरोप को खारिज कर दिया गया था। उनकी गिरफ्तारी जनवरी में इसलिए हुई कि उन्होंने दो अन्य कार्यकर्ताओं, अपने भाई रिनछेन सामद्रुप और छिमी नामग्याल की रिहाई के लिए आंदोलन तेज किया था। इन्हें अगस्त 2009 में हिरासत में तब लिया गया, जब कई पुरस्कारों से सम्मानित तस्करी विरोध और वन संरक्षण के मुद्दे पर काम करने वाले उनके गैर सरकारी संगठन ने चंद भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा लुप्त हो रहे वन्यजीवों के अवैध शिकार का भंडाफोड़ किया था। नतीजतन, रिनछेन को साल भर जेल में बंद रखने के पहले एक सतही ट्रायल में विभाजनवादी भावनाओं को भड़काने के आरोप में पांच साल की कारवास की सजा दी गयी। इस मुकदमे में मूल साक्ष्य उस आलेख को बनाया गया, जिसमें दलाईलामा का कुछ जिक्र था, जबकि रिनछेन ने कहा कि उनकी वेबसाइट पर इस आलेख का प्रकाशन किसी और ने किया था। गुरूवार को जारी एक बयान में एमनेस्टी इंटरनेशनल ने यह कहते हुए इन तीनों कार्यकर्ताओं की रिहाई की मांग की कि बिना ट्रायल के उन्हें सजायाफ्ता करार दे दिया गया है। 'इन दोनों भाइयों पर मुकदमा व सजा बिल्कुल अनुचित है। उनके वकील कहते रहे हैं कि उन्हें मुवक्किलों के साथ मिलने नहीं दिया।' उधर छिमी 21 महीने की सश्रम कारावास बिना किसी मुकदमेबाजी के काट रहे हैं। उन पर 'पर्यावरण व धर्म संबंधी अवैध सूचनाओं के जरिये सामाजिक स्थिरता को नुकसान पहुंचाने' और स्थानीय लोगों को संगठित करने का आरोप लगा है। जबकि रिनछेन और छिमी के गैर सरकारी संगठन को चीन की सरकारी मीडिया में भी भारी प्रशंसा मिलती रही है और इसे फोर्ड मोटर कंपनी के फाउंडेशन समेत अभिनेता जेट ली के वन फाउंडेशन से मदद भी मिलती रही है। एमनेस्टी इंटरनेशनल की डिप्टी डायरेक्टर कैथेरिन बेबर ने बयान में कहा है कि 'रिनछेन की सक्रियता को सरकारी अखबारों में जगह मिलती रही है, और स्थानीय कम्युनिस्टी पार्टी के अधिकारियों के हवाले से खबरें छापी गई हैं, जबकि उस समय वह सजा काट रहे थे। इस गैर राजनीतिक परिवार को लक्ष्य करने से साफ जाहिर है कि चीनी अधिकारी बड़े पैमाने पर दमन में लगे हुए हैं। ऐसे मुकदमेबाजी व सजाओं से वहां बढ़ रही पर्यावरणीय आंदोलनों को क्षति पहुंचेगी, जबकि देश में इनकी सख्त दरकार है।'

इन भाइयों के अन्य संबंधियों को भी अधिकारियों द्वारा प्रताड़ित किया जा रहा है। उनकी एक बहन सोनम छोफेल को डेढ़ साल के सश्रम कारावास की सजा सुनायी गयी है, जिन पर रिनछेन सामद्रुप को न्याय दिलाने के लिए बीजिंग में लोगों के धरने को संगठित करने का आरोप है। एक दूसरे भाई रिनछेन दोरजी, जिन्होंने कर्मा सामद्रुप के दुभाषिये की भूमिका निभायी थी, को भी मार्च में हिरासत में ले लिया गया और अब तक यह नहीं पता चल पाया है कि वे कहां हैं।

चीनी लेबर पार्टी द्वारा मध्यमार्गी नीति को समर्थन

(तिब्बत डॉट नेट, 12 जुलाई, धर्मशाला)

दलाई लामा और उनकी सुलहकारी मध्यमार्गी नीति का समर्थन करने वाले चीनियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

उनकी गिरफ्तारी जनवरी में इसलिए हुई कि उन्होंने दो अन्य कार्यकर्ताओं, अपने भाई रिनछेन सामद्रुप और छिमी नामग्याल की रिहाई के लिए आंदोलन तेज किया था। इन्हें अगस्त 2009 में हिरासत में तब लिया गया, जब कई पुरस्कारों से सम्मानित तस्करी विरोध और वन संरक्षण के मुद्दे पर काम करने वाले उनके गैर सरकारी संगठन ने चंद भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा लुप्त हो रहे वन्यजीवों के अवैध शिकार का भंडाफोड़ किया था।

हालांकि इस शोध में कुछ राजनीतिक प्रभाव दिखता है। शोधार्थियों ने पचास तिब्बतियों तथा चालीस हान चीनियों के जीनोम का तुलनात्मक अध्ययन किया और इस मान्यता को आधार बनाया है कि तिब्बती करीब 3000 साल पहले हान चीनियों से अलग हो गए। तिब्बती विद्वान इस मान्यता से सहमत नहीं हैं। पुरातात्त्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि सांस्कृतिक रूप से जिस आबादी को तिब्बती के नाम से जाना जा रहा है, वह उस भूभाग में करीब 11000 सालों से रह रही है।

इसी कड़ी में चीनी लेबर पार्टी के शीर्ष सदस्य धर्मशाला स्थित निर्वासित तिब्बतियों के मुख्य केंद्र के दौर पर हैं। पार्टी के चेयरमैन फांगयुआन और सलाहकार यिंग कुआन सी ने बीते 9 जुलाई को प्रेस कांफ्रेस में बताया कि उन्होंने अपने दौरे का समय इस बात को ध्यान में रख कर तय किया कि परमपावन दलाई लामा के जन्म की 75वीं वर्षगांठ में हिस्सा ले सकें। अपने प्रेस वक्तव्य में पार्टी के नेताओं ने आम चीन लोगों व तिब्बतयों के बीच बेहतर समझ व सौहार्द्र विकसित करने के दलाई लामा के महती प्रयासों की भूरि–भूरि प्रशंसा की और समूचे चीन, ताइवान व दुनिया भर में फैले पार्टी के अस्सी हजार सदस्यों की तरफ से उनके जन्मदिवस की हार्दिक बधाइयां प्रेषित कीं। वक्तव्य में कामना की गयी कि परमपावन दलाई लामा हिमालय की तरह दीर्घायु हों, उनके आशीर्वचन महान माचू व द्रिचू नदी की तरह प्रवाहित हो करोड़ों चीनियों व तिब्बतियों को तृप्त करें।'

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के उलट चीनी लेबर पार्टी ने दलाई लामा की मध्यमार्गी नीतियों को पूरा समर्थन दिया। वह भी यह स्वीकार करते हुए कि ऐतिहासिक रूप से तिब्बत एक स्वतंत्र राष्ट्र रहा है। ऑस्ट्रेलिया में रह रहे चीनी लेबर पार्टी के अध्यक्ष युआन ने कहा कि पार्टी ने अपने सदस्यों के एक संकल्प के जरिये मध्यमार्गी नीति पर मुहर लगायी और तिब्बत के मसले पर इसे मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया। तिब्बती व चीनी दूतों के मध्य जारी संवाद प्रक्रिया के बाबत लेबर पार्टी के नेता ने परामर्श दिया कि 'दलाई लामा की तिब्बत व चीन यात्रा बातचीत का मुख्य एजेंडा होना चाहिए। ऐसी यात्रा से चीन व तिब्बत के संबंधों में बेहतर समझदारी विकसित होगी और यह संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में दूरगामी कदम सिद्ध होगा।' प्रेस कांफ्रेंस के दौरान यिंग कुआन सी, जो चीन के दक्षिणी हैनान प्रांत की एक यूनिवर्सिटी में पढ़ाते भी हैं, ने अपनी पार्टी के कुछ कार्यकर्ताओं को धर्मशाला आने के लिए चीन सरकार द्वारा रोके जाने पर दुख प्रकट किया। जब उनसे एक पत्रकार ने पूछा कि क्या वे निर्वासित तिब्बतियों के मुख्यालय में अपनी यात्रा संबंधी अनुभवों को बाकियों के साथ विचार विमर्श करेंगे तो उन्होंने हामी भरते हुए कहा कि अवश्य, मैं अपने इस अनुभव को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाउंगा। पार्टी के इन नेताओं ने धर्मशाला यात्रा के दौरान कालोन ट्रिपा प्रो सामदोंग रिनपोछे से भी मुलाकात की और निर्वासित तिब्बती संसद का भी दौरा किया।

हजारों ने भारी बारिश की परवाह न करते हुए दलाई लामा की 75वीं वर्शगांठ मनायी

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 6 जुलाई)

भारी व मूसलाधार बारिश को धता बताते हुए हजारों निर्वासित तिब्बतियों ने प्रवासी पर्यटकों और स्थानीय और नेपाली समुदायों के सदस्यों के साथ हाथ मिलाते हुए मंगलवार को परमपावन दलाई लामा के जन्म की 75वीं वर्षगांठ समारोह में भागीदारी की। कई तिब्बती उत्सव मनाने की प्रतीक्षा में सुबह से ही घर से बाहर निकल गए थे। बुजुर्ग और औरतें भी तूफानी बारिश की परवाह नहीं करते हुए तय जगह पर पहुंच गईं। विशेष प्रार्थना सत्र, हाग्याल री जैसे पवित्र अनुष्ठान दलाई लामा की स्वास्थ्य कामना व दीर्घजीवी होने के लिए संपादित किये गये। आधिकारिक रूप से समारोह, जिसमें दिन भर का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी था, दलाई लामा की उपस्थिति में मुख्य तिब्बती धार्मिक स्थल (सुगलोग खांग) के दरबार में आयोजित हुआ।

पूज्य 17वें ग्यालवांग करमापा, निर्वासित तिब्बती सरकार के कालोन ट्रिपा (प्रधानमंत्री) प्रो सामदोंग रिनपोछे, तिब्बती संसद के स्पीकर पेनपा सेरिंग और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के कई वरिष्ठ पदाधिकारी समेत स्थानीय भारतीय गणमान्य लोगों ने समारोह में भाग लिया। ऑस्ट्रेलिया के एक चीनी समूह ने भी इस अवसर पर दलाई लामा को शुभकामनाएं दीं। धर्मशाला के भारतीय व नेपाली समुदाय के स्कूलों के शुभचिंतकों ने दलाई लामा को उपहार व शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर तिब्बती, भारतीय और नेपाली कलाकारों ने पारंपरिक वेशभूषा में सांस्कृतिक नृत्य–गीत कार्यक्रम पेश कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

दुनिया भर में तिब्बतियों के लिए दलाई लामा का जन्मदिन सबसे महत्वपूर्ण और पवित्र अवसर माना जाता है और सामान्यतः पारंपरिक तिब्बती तरीके से व्यापक समारोह मनाये जाने के रूप में जाना जाता है। दलाई लामा आज भी तिब्बती लोगों की एकता और उनके स्वतंत्रता संघर्ष के सर्वोच्च प्रतीक हैं। तिब्बती लोग उन्हें निर्विवाद रूप से राज्य के प्रमुख तथा तिब्बत के सर्वोच्च आध्यात्मिक नेता के रूप में सम्मान देते हैं। इस मौके पर उपस्थित जनसमूह के समक्ष संक्षिप्त भाषण देते हुए दलाई लामा ने साभी तिब्बतियों और दुनिया भर में फैले शुभचिंतकों को जन्मदिवस की शुभकामनाओं और सम्मानजनक उत्सवों–समारोह के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

दलाई लामा ने यह भी कहा, "तिब्बत के भीतर कायम हो रहा भय का वातावरण तिब्बतियों को उनकी अपनी मातृभूमि में यह उत्सव मनाने से रोक नहीं पायेगा। अपने दिलों में पूरी श्रद्धा व शुभकामनाएं लिये हुए तिब्बतियों के

लिए खुले तौर पर अपनी भावनाएं अभिव्यक्त करने के सिवाय कोई विकल्प नहीं है। मैं इन्हें अपनी आस्था और दृढ़संकल्प कायम रखने के लिए साधुवाद देता हूं।"

तिब्बती हैं सबसे तेज विकासशील प्रजाति

(न्यूज कोर, 2 जुलाई, 2010)

तिब्बती संभवतः मानव विकास के मामले में सबसे तेजी से विकास करने वाली प्रजाति हैं। शोध पत्रिका साइंस रिपोर्ट में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार उच्च अक्षांशों और कम ऑक्सीजन उपलब्धता के बावजूद जिंदा रह सकने के अनुवांशिक गुण वाले लोगों का हिस्सा बीते तीन हजार सालों से भी कम समय में आबादी के दस फीसदी से 90 फीसदी तक जा पहुंचा है। ईपीएएसआई नामक एक जीन के कारण तिब्बतियों का उस कठिन परिस्थिति में भी विकास हो रहा है, जिसमें अन्य प्रजातियों के लिए जीवित रहना मुश्किल हो जाता है। गौरतलब है कि तिब्बती आबादी का अधिकतर हिस्सा 13000 फीट की ऊंचाई पर रहता है, जहां समुद्र तल के मुकाबले 40 फीसदी कम ऑक्सीजन पाया जाता है। इस शोध को चीन, डेनमार्क और कैर्लिफोनिया विश्वविद्यालय के बार्कले और डेविस कैंपस के वैज्ञानिकों ने अंजाम दिया है। बार्कले कैंपस से जुड़े इंटरेक्टिव बायोलॉजी के प्रोफेसर राससमस नील्सन, जो इस अध्ययन दल के मुखिया थे, बताते हैं कि 'मानव जाति में यहां सबसे तेज अनुवांशिकी बदलाव देखा गया है। कैलिफोर्निया स्थित ला जोला के स्क्रिप्स रिसर्च इंस्टीटयूट के जेनेटिक डिपार्टमेंट के अध्यक्ष ब्रुस ब्यूटलर फरमाते हैं कि 'अगर चयन का दबाव पर्याप्त ज्यादा हो तो यह बदलाव करीब डेढ़ सौ पीढ़ियों में निश्चित तौर पर हो सकता है। नील्सन के अनुसार 'समुद्री सतह की ऊंचाई वाले स्थानों पर रहने वाले लोग जब तिब्बत आते हैं, तो वे यहां तुरंत थक जाते हैं।

आखिरकार उनका शरीर अधिकाधिक हीमोग्लोबिन पैदा करना शुरू कर देता है और वे पर्यावरण के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। लेकिन तिब्बती, अपनी अनुवांशिक विशिष्टता के कारण, कम हीमोग्लोबिन स्तर और कम ऑक्सीजन के बीच ही कार्य करने में सक्षम होते हैं। हालांकि इस शोध में कुछ राजनीतिक प्रभाव दिखता है। शोधार्थियों ने पचास तिब्बतियों तथा चालीस हान चीनियों के जीनोम का तुलनात्मक अध्ययन किया और इस मान्यता को आधार बनाया है कि तिब्बती करीब 3000 साल पहले हान चीनियों से अलग हो गए। तिब्बती विद्वान इस मान्यता से सहमत नहीं हैं। पुरातात्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि सांस्कृतिक रूप से जिस आबादी को तिब्बती के नाम से जाना जा रहा है, वह उस भूभाग में करीब 11000 सालों से रह रही है। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में वेदरहेड इस्ट एशियन इंस्टीटयूट में मॉडर्न तिब्बत स्टडीज प्रोग्राम के निदेशक रॉबर्ट बारनेट कहते हैं कि चीन सरकार किसी भी तरह से यह साबित करने की कोशिश करती है कि तिब्बती लोग राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक या नस्लीय यानी, हर प्रकार से चीन का हिस्सा हैं। तिब्बतियों की आजादी का मुद्दा चीन में एक बेहद संवेदनशील मसला है। 2008 में तिब्बत में चीनी प्रभुत्व व नियंत्रण को लेकर व्यापक दंगे हुए थे। नील्सन कहते हैं कि 'लोगों की पहचान अनुवांशिकता से नहीं बल्कि उनकी सांस्कृतिक विरासत से मिलती है। और मुझे नहीं लगता कि तिब्बती आजादी और उनके स्वशासन के अधिकार के मसले पर इस शोध का कोई प्रभाव पड़ेगा।"

लेकिन तिब्बती, अपनी अनुवांशिक विशिष्टता के कारण, कम हीमोग्लोबिन स्तर और कम ऑक्सीजन के बीच ही कार्य करने में सक्षम होते हैं।

दलाई लामा का जन्मदिवस दिल्ली में मनाया गया

(तिब्बत डॉट नेट, नई दिल्ली, 7 जुलाई)

इंडिया हैबिटेट सेंटर में 'सेलिब्रेटिंग द दलाई लामा' नामक विचार संगोष्ठी में उनके व्यक्तित्व, दर्शन और उपदेशों पर विचार विमर्श हुआ, जिसमें लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तित्व, लेखक, कलाकार, पत्रकार, शिक्षाविद, सामाजिक कार्यकर्ता, आध्यात्मिक विभूति और कूटनीतिक मौजूद थे। भारत के पूर्व विदेश सचिव कंवल सिब्बल ने परमपावन दलाई लामा को 'भारत–तिब्बत के बीच एक शाश्वत जोड़' बताया और कहा कि परमपावन भारत व चीन के बीच एक सुलहकारी ताकत बन सकते हैं। 'दलाई लामा भारत व चीन के बीच राजनीतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और पारागन सेतु बन सकते हैं । यह कहते हुए सिब्बल ने जोड़ा कि चीन व तिब्बत के मध्य सुलह भारत व चीन के बीच सुलह का रास्ता खोल सकता है और 'परमपावन लामा को यह रास्ता खोलने देना चाहिए।' सिब्बल ने दलाई लामा को 'महान आध्यात्मिक नेता, एक शांति निर्माता, बताया तथा उनके 'महान निर्वासन' को महिमामंडित किया, जिन्होंने अपनी मातृभूमि को 51 साल पहले छोड़ दिया और अनथक रूप से तिब्बत में रह रहे तथा बाहर में निर्वासित लोगों के लिए संघर्ष किया और प्रवासी तिब्बत समुदाय की एकता को अतुलनीय ढंग से व्यवस्थित किया। 'उनका सतत अहिंसक रवैया उनके चहुंओर व्याप्त हिंसा के आलम में बेहद महत्वपूर्ण है, जिससे हम सब वाकिफ हैं।' 'इससे कोई शायद ही इनकार करे कि वे दुनियाभर में सबसे ताकतवर और सम्मानित आध

दुनिया भर में तिब्बतियों के लिए दलाई लामा का जन्मदिन सबसे महत्वपूर्ण और पवित्र अवसर माना जाता है और सामान्यतः पारंपरिक तिब्बती तरीके से व्यापक समारोह मनाये जाने के रूप में जाना जाता है। दलाई लामा आज भी तिब्बती लोगों की एकता और उनके स्वतंत्रता संघर्ष के सर्वोच्च प्रतीक हैं।

(1)

(2)

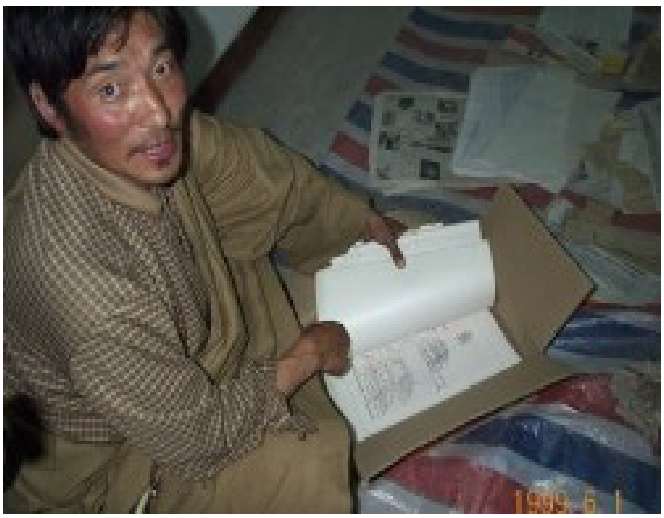

(10)

कैमरे की आं

1. अगला दलाई लामा चीन की इजाजत से चुनने की बात तिब्बतियों को बिल्कुल पसंद नहीं आई हुए। (फोटोः मारियो टामा, गेट्टी इमेज)
2. 18 जून, 2010 को एसोसिएटेड प्रेस द्वारा जारी इस फोटो में तिब्बत के ल्हासा शहर में रिनछेन गया था। इन दोनों भाइयों पर पूर्वी तिब्बत के स्थानीय अधिकारियों ने आरोप लगाया था कि को 21 माह के सश्रम पुर्नशिक्षा कार्यक्रम में डाल दिया गया। (फोटोः एएफपी)
3. परम पावन दलाई लामा (बीच में) मंगलवार, 6 जुलाई, 2010 को अपने 75वें जन्म दिन
4. समर्पण समारोह के दौरान (बाएं से) जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर
5. भारतीय विदेश सचिव निरूपमा राव (फाइल फोटो)
6. तिब्बत की इस नई तस्वीर में तिब्बत के शिगास्ते में चीनी सुरक्षा बलों के सामने खनन के वि के नामलिंग काउंटी में बड़े पैमाने पर हुए खनन विरोधी प्रदर्शनों में करीब 30 तिब्बतियों को
7. साल 2008 के 14 मार्च की इस फाइल फोटो में प्रदर्शनकारी एक पुलिस वाहन पर कचरा फें विस्तृत जानकारी दी गई है कि तिब्बत में करीब 50 साल के चीनी कब्जे के बाद तिब्बतियों बयान भी शामिल किए गए हैं। (फाइल फोटोः एपी)
8. तिब्बती अपने जीवन पद्धति को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन क्या वे आगे इसे ब
9. काठमांडू में मार्च, 2010 में जेल से रिहा होने के बाद रो पड़ी एक निर्वासित तिब्बती (बीच में) को तिब्बत वापस भेज दिया है। संयुक्त राष्ट्र ने इस पर गहरी चिंता जताई है। (एएफपी फा
10. द्रोणाचार्य स्कूल के भारतीय विद्यार्थी पंजाबी नृत्य पेश करते हुए।

(9)

(8)

(3)

(4)

ंख से तिब्बत

है। गत 20 मई को रेडियो सिटी म्युजिक हॉल में बौद्ध भिक्षु परमपावन दलाई लामा का स्वागत करते

न सामद्रुप दिख रहे हैं। सामद्रुप और उनके भाई छिमी नामग्याल को अगस्त 2009 में गिरफ्तार किया
वे विलुप्तप्राय जीवों का शिकार करते हैं। "राष्ट्रीय सुरक्षा को नुकसान पहुंचाने" के आरोप में छिमी

पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के प्रमुख लोगों के साथ। फोटोः नामग्याल सेवांग–टिबेट डॉट नेट
अब्दुल्ला, परमपावन दलाई लामा, एच.ई. गाडेन ट्रिपा और थिकसे रिनपोछे

रोध में प्रदर्शन करने वाले तिब्बती प्रदर्शनकारी डटे हुए दिख रहे हैं। मई के अंतिम हफ्ते में शिगास्ते
हिरासत में लिए जाने की खबर है। (आरएफए)
कते दिख रहे हैं। गुरुवार, 22 जुलाई, 2010 को जारी एक मानवाधिकार वाच रिपोर्ट में इस बात की
द्वारा की गई सबसे बड़ी सरकार विरोधी जनक्रांति को किस तरह से दबाया गया। इसमें गवाहों के

घाने में सफल रहेंगे।
। संयुक्त राष्ट्र द्वारा बुधवार को जारी बयान में बताया गया है कि नेपाल ने तीन तिब्बती शरणार्थियों
इल फोटोः प्रकाश मठेमा)

(फोटो परिचय : ऊपर बाएं से घड़ी की दिशा में)

(5)

(7)

(6)

यह संगोष्ठी परमपावन दलाई लामा के ब्यूरो द्वारा 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित की गयी थी। बाद में शाम को करीब 300 से ज्यादा भारतीय नेताओं और विदेशी राजदूतों ने डिनर रिसेप्शन में भाग लिया, जहां 1960 के दषक में दलाईलामा के पूर्व लॉयजन आफिसर इंदर मलिक की अगवानी नई दिल्ली में दलाईलामा के प्रतिनिध तेम्पा सेरिंग ने की। श्री मलिक ने याद दिलाया कि कैसे दलाईलामा के साथ चार सालों के कार्यानुभव ने उन्हें एक बेहतर इंसान बनाया।

यात्मिक आवाज हैं। '

प्रतिष्ठित पत्रकार और द संडे गार्जियन के एमजे अकबर ने कहा कि माननीय दलाई लामा से उन्होंने सीखा है कि कैसे किसी एक के अनुभव से ऊपर उठा जाये और अहिंसा व करूणा पर आधारित हल खोजा जा सके। 'उनके इस संदेश को मुझे आत्मसात करने में काफी वक्त लगा, क्योंकि पहले पहल मैं समझ नहीं सका कि हिंसा के आलम में कैसे कोई इतना पवित्र व शांतिपूर्ण हो सकता है'। अकबर उस सेमिनार की ओर संकेत कर रहे थे, जिसमें उन्होंने 1990 के पूर्वाद्ध में दंगों के कवरेज के दौरान शिरकत की थी और नाराज होकर परमपावन लामा के करूणामय आधारित भाषण के दौरान सवाल पूछे। अहिंसा का मतलब हिंसा की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि इसकी उपस्थिति है, जिसे गांधीजी आत्मबल की उपस्थिति कहते रहे। अपनी अंदरूनी ताकत का मजबूती से इस्तेमाल के साथ राज्य से यदि वह मांगा जाए, जो उसके पास नहीं है (वह है मानवता) तो दमनकर्ता हैरान रह जाता है। उन्होंने चीन द्वारा परमपावन के अपमान के लिए प्रयुक्त अजीबोगरीब नामकरण जैसे 'विभाजनकारी' या 'दास मालिक' पर कहा कि यह असाधारण है कि एक राष्ट्र, जो दुनिया भर में पूंजीवाद का सबसे बड़ा दास मालिक बना हुआ है, वह दलाईलामा के साथ ऐसा व्यवहार करता है।

पूर्व राजदूत दलीप मेहता के अनुसार दलाई लामा एक करूणामयी पर्यावरणविद और एक व्यावहारिक राजनीतिज्ञ हैं, जो चीन के साथ मध्यमार्ग से सुलह करना चाहते हैं। उनका व्यक्तित्व ऐसे राजनेता के माफिक है, जिनके पास लौकिक शक्ति है, और जिन्होंने अपने समुदाय में लोकतंत्र को आविर्भाव किया है। परमपावन के दिल में भारत के लिए विशेष स्थान है, क्योंकि यह भारत है, जहां तिब्बती सभ्यता अस्तित्व में बरकरार रही है। ये तिब्बती ही है, जिन्होंने महात्मा बुद्ध के करूणा व अहिंसा के संदेशों को वापस भारत लाने की महती भूमिका निभायी, उस देश में जहां बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ।

सम्मानित शास्त्रीय नृत्यांगना सोनल मानसिंह ने संस्कृत के विशिष्ट उदाहरणों के साथ दलाई लामा के आध्यात्मिक, अच्छाई, मानवता और दयालुता की तुलना भारतीय देवताओं जैसे विष्णु एवं शंकर के साथ की। उन्होंने कहा, "नीलकंठ धारी शिव की तरह दलाईलामा ने घृणा रूपी विष पीया है और निर्वासन में इतने कष्ट भोगे हैं, लेकिन उन्होंने अपनी बुनियादी अच्छाई पर इसका कोई कुप्रभाव नहीं पड़ने दिया। ईश्वर की चाह है कि दलाईलामा मानवता के दुश्मनों और बाकी दुनिया के बीच एक अवरोधक के रूप में विद्यमान रहें।'

पूर्व सॉलिसीटर जनरल सोली सोराबजी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि 'दलाईलामा विषम परिस्थितियों और अनवरत मिथ्यापवादों के बावजूद सांस्कषतिक अधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता की संरक्षण की खातिर अपने करूणामयी और अहिंसक नीति पर अक्षुण्ण रहे। उन्होंने राजाओं के साथ काम किया है, मगर उन्होंने आम लोगों से अपना संबंध नहीं तोड़ा है।' सोली सोराबजी ने इंडिया हैबिटेट सेंटर के गुलमोहर हॉल में इस विचार संगोष्ठी की अध्यक्षता की थी।

प्रसिद्ध डॉक्यूमेंट्रर फिल्मकार राजीव मेहरोत्रा ने अपने वक्तव्य में 'एक सादगीपूर्ण बौद्ध भिक्षु के रूप में, एक आध्यात्मिक नेता के रूप में आधुनिक विज्ञान के साथ उनका संवाद और अंतर–धार्मिक संवाद के प्रति उनकी प्रतिबद्धता आदि के रूप में श्रद्धेय लामा के मानवीय आयामों को स्पर्श किया।' 'वह मानवीय उपलब्धि के साक्षात अवतार हैं। यह अन्य लोगों को अपने दैनंदिन जीवन में आध्यात्मिक उपदेशों को उतारने की उम्मीद देता है और यह महज अमूर्त लिखित सामग्री तक सीमित नहीं है। वह हमें ज्ञान देते है कि कल्प के बारे में सोचें, 'बड़ा सोचें और व्यापक सोचें।'

यह संगोष्ठी परमपावन दलाई लामा के ब्यूरो द्वारा 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित की गयी थी। बाद में शाम को करीब 300 से ज्यादा भारतीय नेताओं और विदेशी राजदूतों ने डिनर रिसेप्शन में भाग लिया, जहां 1960 के दशक में दलाईलामा के पूर्व लॉयजन आफिसर इंदर मलिक की अगवानी नई दिल्ली में दलाईलामा के प्रतिनिध तेम्पा सेरिंग ने की। श्री मलिक ने याद दिलाया कि कैसे दलाईलामा के साथ चार सालों के कार्यानुभव ने उन्हें एक बेहतर इंसान बनाया। इस मौके पर तिब्बत संग्रहालय द्वारा प्रस्तुत एक फोटो प्रदर्शनी में भी आगंतुक मेहमानों ने रुचि दिखायी।

नालंदा विश्वविद्यालय का पुनरूद्धार बिना दलाई लामा के !

(द टेलीग्राफ, नई दिल्ली, 9 जुलाई, 2010)

नालंदा विश्वविद्यालय का पुनरूद्धार होगा, मगर इसमें दलाई लामा की कोई भूमिका नहीं होगी, ऐसा इसलिए, ताकि चीन की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचे। दलाई लामा की गैरमौजूदगी का यही कारण है, जबकि यह विश्वविद्यालय बौद्ध दर्शन व चिंतन का सबसे प्राचीन पीठ है और इसके पुनरूत्थान में दलाई लामा की भूमिका महत्वपूर्ण है। कैबिनेट ने निर्णय लिया है कि संसद के मानसून सत्र में इस विश्वविद्यालय के पुनरूत्थान से संबंधित विधेयक लाया जायेगा, जो पूर्वी एशिया सम्मेलन

द्वारा प्रेरित एक अंतरराष्ट्रीय पहल के तहत है और जिसमें भारत व चीन के अलावा 14 देश सदस्य हैं। इस विश्वविद्यालय के इस साल से सत्र शुरू करने की संभावना है। यहां बौद्ध शिक्षा महत्वपूर्ण पाठयक्रमों में एक होगा। दलाई लामा के अनुयायियों ने दलाई लामा, जिन्हें बौद्धवाद के नालंदा परंपरा के सबसे बड़े प्रतिपादक के रूप में देखा जाता रहा है, की अनुपस्थित को अपने लिए एक बड़ा रणनीतिक कदम माना है। वे कहते हैं कि भारत का रवैया विचित्र है, लेकिन भारत की भू–राजनीतिक विवशताओं को देखते हुए समझने योग्य हैं। एक बुजुर्ग भिक्षु ने बताया कि इस विश्वविद्यालय का पुनरूद्धार किया जा रहा है, मगर इस परियोजना का अंग होते हुए भी महामहिम लामा से ज्यादा भूमिका बौद्ध मतावलंबी देशों की देखी जा रही है। सच यह है कि 12वीं सदी में आक्रमणकारियों द्वारा नालंदा विवि को जला कर खाक में तब्दील कर देने के बाद दलाई लामा जैसे तिब्बती बौद्धों ने ही नालंदा परंपरा और महायान बौद्ध उपदेशों को जीवित रखा है। यद्यपि दलाई लामा की कोई भूमिका नहीं होगी, मगर पुनरूत्थान योजना की बागडोर विख्यात अर्थशास्त्री और नोबेल पुरस्कार विजेता अर्मत्य सेन के हाथों में होगी, जो नालंदा मेंटर ग्रुप के मुखिया भी हैं। इस ग्रुप ने पूर्वी एशिया में चीन व सिंगापुर समेत कई देशों के सहयोग से नालंदा के पुनरूत्थान कार्यक्रम की पहल की है। इस संरक्षक दल के द्वारा अगले माह से रेगुलेशन का खाका तैयार करना है और यही अभी अंतरिम शासी निकाय होगा, जब तक कि पूर्वी एशिया के देश बोर्ड मेंबर का मनोनयन न कर लें। भारत के राष्ट्रपति प्रस्तावित विश्वविद्यालय के विजिटर होंगे और दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज की गोपा सब्बरवाल को पहला रेक्टर यानी कुलानुशासक बनाये जाने की चर्चा है।

यह अंतरराष्ट्रीय विवि एक स्वायत्त संस्थान होगा और इसके प्रतीक चिन्ह के रूप में बिहार के नालंदा म्यूजियम में रखी नालंदा मुहर स्वीकार की जायेगी। इस पुनरूत्थान योजना का कार्यरूप एक अंतर–देशीय समझौते के अनुरूप दिया जा रहा है, जिसमें पूर्वी एशिया सम्मेलन के सदस्य दशों की भागीदारी है। भारत ने 1005 करोड़ का अंशदान दिया है। योजना आयोग 50 करोड़ देगा, जब तक कि यह संस्थान आत्मनिर्भर न हो जाये। सदस्य देश स्वैच्छिक अंशदान करेंगे, यद्यपि यह विवि पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत कोष जुटाएगा। सूचना व प्रसारण मंत्री अंबिका सोनी ने कैबिनेट बैठक के बाद बताया कि 'प्रस्तावित विवि के लिए दिल्ली में एक प्रोजेक्ट ऑफिस तैयार किया गया है और संसद से विधेयक के पारित हो जाने के बाद कार्यरूप में आ जायेगा।' इस संस्थान में बुद्धिस्ट स्टडीज, दर्शनशास्त्र व तुलनात्मक धर्म, ऐतिहासिक अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन, लोकनीति के संबंध में व्यापार प्रबंधन, विकास अध्ययन ,भाषा व साहित्य तथा पर्यावरण अध्ययन सरीखे अभिनव शिक्षा केंद्र होंगे। बिहार सरकार ने पहले ही नालंदा भग्नावशेषों के समीप राजगीर में 500 एकड़ की भूमि इसके लिए अधिग्रहित कर ली है और बाकी 500 एकड़ लिया जाना बाकी है। अंबिका सोनी ने आगे कहा कि इस संस्थान के पुनरूत्थान से बौद्ध अध्ययन में नये सिरे से अभिरूचि जगेगी और इससे पर्यटन उद्योग को भी लाभ हासिल होगा।

राव की यात्रा भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार शिवशंकर मेनन की बीजिंग यात्रा के सप्ताह भर बाद हुई हैं।

अमर उजाला अखबार ने दलाई लामा का 75वां जन्मदिवस हर्षोल्लास से मनाया

(तिब्बत डॉट नेट, 9 जुलाई, धर्मशाला)

अमर उजाला अखबार ने परमपावन दलाईलामा के जन्मदिन की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर भारत–तिब्बत सांस्कृतिक शो आयोजित किया। गुरुवार को टिबेटन इंस्टीटयूट ऑफ परफॉरमिंग आर्ट्स में आयोजित इस समारोह में कुकरेजा एजुकेशन, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन, यूको बैंक, स्टडी चैनल धर्मशाला, भारतीय स्टेट बैंक और पंजाब नेशनल बैंक, धर्मशाला ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत दलाई लामा के संक्षिप्त जीवन परिचय, उपलब्धियों से हुई, जिसमें आयोजकों ने उनके स्वस्थ और दीर्घ जीवन की कामना की। कालोन ट्रिपा प्रोफेसर सामदोंग रिनपोछे ने अपने वक्तव्य में आयोजकों को इतना भव्य उत्सव आयोजित करने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया।

उन्होंने अमर उजाला अखबार को भी तिब्बती लोगों के प्रति निरंतर समर्थक होने पर धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने गांधी के उपदेशों के अनुसरण पर लोगों की प्रशंसा की और उनके प्रति आभार प्रकट किया। टिबेटन इंस्टीटयूट ऑफ परफॉरमिंग आर्ट्स और थांगटोंगलुगर कलाकारों द्वारा पारंपरिक तिब्बती नृत्य पेश किया गया। द्रोणाचार्य कॉलेज ऑफ एजुकेशन, शरण कॉलेज ऑफ एजुकेशन और अन्य संस्थानों के छात्रों ने भारतीय नृत्य प्रस्तुत किया। इस पावन दिन पर कालोन ट्रिपा के अलावा हिमाचल प्रदेश स्कूल एजुकेशन के प्रोफेसर चमनलाल गुप्ता, कांगड़ा के एडिशनल डिप्टी कमिश्नर डॉ संदीप भटनागर और कांगड़ा के पुलिस अधीक्षक डॉ. अतुल फलजेले जैसे अनेक अतिथि व गणमान्य लोगों ने हिस्सा लिया।

इस पुनरूत्थान योजना का कार्यरूप एक अंतर–देशीय समझौते के अनुरूप दिया जा रहा है, जिसमें पूर्वी एशिया सम्मेलन के सदस्य दशों की भागीदारी है। भारत ने 1005 करोड़ का अंशदान दिया है। योजना आयोग 50 करोड़ देगा, जब तक कि यह संस्थान आत्मनिर्भर न हो जाये।

भारतीय विदेश सचिव निरूपमा राव दलाई लामा से मिली

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 10 जुलाई)

सूत्रों के मुताबिक भारत की विदेश सचिव निरूपमा राव तिब्बती नेता दलाई लामा से उनके आवास पर मिलीं। पूर्व विदेश प्रवक्ता और चीन में राजदूत रहीं राव विदेश मंत्रालय में पूर्वी एशिया मामलों के संयुक्त सचिव गौतम बंबावाले के साथ दिल्ली से आकर धर्मशाला में मिलीं। सूत्रों ने बताया कि दोनों के बीच मुलाकात घंटे भर चली। निरूपमा राव की यात्रा को ठीक उसी तरह मीडिया की नजरों से दूर रखा गया, जिस तरह उनके पूर्ववती सचिव श्याम सरन और शिवशंकर मेनन की यात्राएं हुई थीं। राव की यात्रा भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार शिवशंकर मेनन की बीजिंग यात्रा के सप्ताह भर बाद हुई हैं। मेनन ने बीजिंग में प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ, विदेश मंत्री यांग जियेची और स्टेट काउंसिलर दाइ बिंगुओ से मुलाकात की थी।

चीन इस दलील के साथ भारत की आलोचना करता है कि भारत अपनी भूमि पर तिब्बती शरणार्थियों को राजनीतिक गतिविधियां संचालित करने की अनुमति देता रहा है। जबकि दूसरी तरफ भारत तिब्बती कार्यकर्ताओं, जो प्रायः चीन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन आदि को लेकर हिरासत में ले लिये जाते हैं, की राजनीतिक गतिविधियों को बेहद सावधानी पूर्वक नियंत्रित करता रहता है। परमपावन दलाई लामा आम तौर पर भारत की तिब्बत पर रवैये को 'अत्यधिक सतर्कता' की संज्ञा देते रहे हैं। पिछले साल भारत ने तिब्बती धर्मगुरू को चीन की सीमा से सटे राज्य अरूणाचल प्रदेश में जाने की अनुमति दे दी थी, जिसपर चीन ने आपत्ति की थी। हालांकि तब भारतीय विदेश मंत्री एस.एम. कृष्णा ने संवाददाताओं को बताया था कि भारत सरकार को लामा की अरूणाचल यात्रा या भारत में कहीं आने–जाने से कोई दिक्कत नहीं है, बशर्ते वह राजनीतिक बातें न करें।

हमारे लिए यह शर्म की बात है कि अमेरिका और यूरोप तिब्बत के उद्धारक की भूमिका निभा रहे हैं, जबकि भारत उसका दमन और नाश करने वालों का सहायक बना है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि तिब्बत के मसले पर भारत की भूमिका गौण रही तो भारत कभी भी नैतिक रूप से अपना सिर नहीं उठा पाएगा।

दलाई लामा के जन्मदिन पर नेत्र शिविर का आयोजन

मेरठ (अमर उजाला, 7 जुलाई)

परमपावन दलाई लामा जी के 75वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में मंगलवार को जिला दृष्टिहीनता निवारण समिति, छावनी परिषद और कल्याणं करोति के योगदान से बेगमपुल स्थित कैंट जनरल अस्पताल में लगाए गए शिविर में 84 नेत्र रोगियों की जांच की। उन्होंने 15 रोगियों को मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए चयनित किया। इनमें से दस को मोतियाबिंद के ऑपरेशन हेतु कल्याणं करोति द्वारा संचालित निःशुल्क नेत्र चिकित्सालय कैंटोनमेंट जनरल अस्पताल मेरठ छावनी में रोका गया। शेष पांच ने बाद में आने को कहा। ऑपरेशन डॉ. वी के मलिक, डॉ. मित्तल और डॉ. सतीश नागर ने किए। चश्मे के लिए 26 नेत्र रोगियों की जांच संजय कुमार द्वारा की गई और सात को रियायती दर पर चश्मे उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया। शिविर को सफल बनाने में कल्याणं करोति के डॉ. एस पी रस्तोगी, अनुराग दुबलिश, दिनेश प्रकाश, सीएस रावत, पुष्पा चडढा, अशोक गोयल, देवेंद्र, मीता, गगन कुमार आदि ने योगदान दिया।

दलाई लामा का जन्मोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया

(ललितपुर, राज एक्सप्रेस)

भारत–तिब्बत मैत्री संघ, राष्ट्रीय युवा योजना, आजादी बचाओ आंदोलन, करुणा इंटरनेशनल आदि संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में तिब्बती आध्यात्मिक गुरू, दलाई लामा का 75वां जन्मोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस मौके पर तिब्बत समस्या की ओर विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित कराते हुए तिब्बत को आजाद करने के लिए सार्थक पहल करने की मांग की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भारत–तिब्बत मैत्री संघ के अध्यक्ष सुधाकर तिवारी ने कहा कि शांतिदूत दलाई लामा एक ऐसी विभूति हैं, जिन्होंने अपनी दृढ़ता के बल पर तिब्बत के स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की है और तिब्बतियों को चीनियों के तमाम दमनात्मक कदमों के बावजूद हिंसा के मार्ग से दूर रखने में सफलता प्राप्त की है। इस अवसर पर प्रबुद्ध विचारक धर्मेंद्र गोस्वामी ने कहा कि तिब्बत की आज़ादी के मसले पर सबसे अधिक पहल करने वाले देशों में अमेरिका और यूरोप के देश हैं। वे मानवाधिकार की बात उठा रहे हैं। हमारे लिए यह शर्म की बात है कि अमेरिका और यूरोप तिब्बत के उद्धारक की भूमिका निभा रहे हैं, जबकि भारत उसका दमन और नाश करने वालों का सहायक बना है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि तिब्बत के मसले पर भारत की भूमिका गौण रही तो भारत कभी भी नैतिक रूप से अपना सिर नहीं उठा पाएगा। आज़ादी बचाओ आंदोलन एवं राष्ट्रीय युवा योजना के वरिष्ठ कार्यकर्ता विनोद त्रिपाठी ने बताया कि आज शांतिप्रिय तिब्बत चीनी हमले तथा कब्जे के बाद एक विशाल फौजी छावनी में बदल चुका है। चीन ने सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सड़कों का जाल तैयार कर लिया है। अनेक हवाई अड्डे एवं रडार स्टेशन बना लिए हैं। चीन ने एक तिहाई से अधिक न्यूक्लियर मिसाइलें तिब्बत में स्थापित कर ली हैं। चीनी प्रक्षेपास्त्रों

के भारत के इतना करीब होने से भारत के 20 महत्वपूर्ण औद्योगिक शहर सदैव चीन के निशाने पर हैं। उन्होंने कहा कि सामरिक दृष्टि से तिब्बत की आज़ादी भारत के लिए महत्वपूर्ण है।

तिब्बत समस्या को दर्शाती फोटो प्रदर्शनी

(सन्मार्ग, भुवनेश्वर, 11 जुलाई)

चीन द्वारा तिब्बत को कब्जाए जाने के बाद व दलाई लामा के तिब्बत से निवार्सन के पचास वर्ष से ऊपर की यात्रा को दर्शाती एक फोटो प्रदर्शनी शनिवार को स्थानीय बुद्ध विहार में आयोजित की गई। भारत–तिब्बत सहयोग मंच की ओडिशा इकाई ने इस प्रदर्शनी को नई दिल्ली स्थित भारत–तिब्बत समन्वय केंद्र के सहयोग से आयोजित किया गया। बौद्ध भिक्षु वेन गस्पे सदाथिसा थरे ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उत्कल संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. विमलेंदु महंती, भारत–तिब्बत सहयोग मंच की ओडिशा इकाइ के सचिव दीपक कुमार महंत समेत अनेक वरिष्ठ लोग उपस्थित थे। इस फोटो प्रदर्शनी में 1959 में परमपावन दलाई लामा के भारत आगमन के बाद से अब तक उनके तथा तिब्बती शरणार्थियों के पचास वर्ष से अधिक के निर्वासन काल के महत्वपूर्ण दुर्लभ चित्रों को भारतीयों की जानकारी के लिए शामिल किया गया। तिब्बती शरणार्थियों के भारत आगमन के बाद से उनकी शिक्षा, जीवन शैली, संस्कृति को इस प्रदर्शनी के माध्यम से दर्शाने की कोशिश की गई है। परमपावन दलाई लामा के विभिन्न ऐतिहासिक क्षणों को कैमरे में कैद कर इस प्रदर्शनी में लगाया गया है। तिब्बती शरणार्थियों की अपनी जन्मभूमि के प्रति ललक, चीन के कब्जे से मातृभूमि वापस लेने की जो अपार इच्छा है उसे बड़ी खूबी के साथ इस प्रदर्शनी में दर्शाने की कोशिश की गई। 50 साल से अधिक समय से पराधीनता की बेड़ी बांधे तिब्बत के लोगों तथा इस दौरान भारत में जन्मे उनकी दूसरी पीढ़ी के लोग भी किस प्रकार अपनी भाषा एवं संस्कृति को नहीं भूले हैं, इसे भी दर्शाने की कोशिश इस प्रदर्शनी में की गई है। चीन से भारत आने के बाद परम पावन दलाई लामा कैसे एक सामान्य बौद्ध भिक्षु से विश्व के एक अद्वितीय जन नेता के रूप में उभरे हैं, इसका एक चित्रण भी इस प्रदर्शनी में किया गया है। विश्व के विभिन्न देशों के राजनेताओं के साथ उनके ऐतिहासिक क्षणों को भी इस फोटो प्रदर्शनी में शामिल किया गया है। संक्षेप में कहा जाए तो तिब्बत की गुलामी से अब तक के निर्वासन के इतिहास को इस फोटो प्रदर्शनी के माध्यम से दर्शाया गया है। गत 50 सालों से भारतीयों द्वारा तिब्बतियों को समर्थन प्रदान किए जाने के कारण इस प्रदर्शनी के माध्यम से तिब्बतियों द्वारा भारतीयों को कृतज्ञता प्रदान की गई है। आने वाले दिनों में भारतीयों द्वारा तिब्बतियों को दिया जा रहा समर्थन ऐसे ही जारी रहने की आशा व्यक्त की गई है।

इस कार्यक्रम को आयोजित करने वाले भारत–तिब्बत सहयोग मंच की ओडिशा इकाइ के सचिव दीपक कुमार महंत ने प्रदर्शनी के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि तिब्बतियों के बारे में जानकारी प्रदान करना इसका मुख्य उद्देश्य है। तिब्बत जब तक स्वतंत्र नहीं हो जाता, तब तक भारत का उत्तरी सीमांत खतरे में रहेगा। इसलिए भारत सरकार को यह चाहिए कि तिब्बत को चीनी कब्जे से मुक्त करने के लिए दबाव बनाए। उन्होंने कहा कि यह प्रदर्शनी पहली बार भुवनेश्वर में आयोजित की जा रही है। इस प्रदर्शनी को देखने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र–छात्राएं, सामाजिक कार्यकर्ता और राजनीतिक दलों के नेता पहुंचे।

तिब्बती शरणार्थियों के भारत आगमन के बाद से उनकी शिक्षा, जीवन शैली, संस्कृति को इस प्रदर्शनी के माध्यम से दर्शाने की कोशिश की गई है।

दलाई लामा की 75वीं जयंती मनाई गई

(दैनिक जागरण, 7 जुलाई, हजारीबाग)

भारत–तिब्बत मैत्री संघ ने छह जुलाई को तिब्बती धर्मगुरू दलाई लामा का 75वां जन्मदिन समारोह पूर्वक स्थानीय जैन मंदिर धर्मशाला में मनाया। उक्त मौके पर बतौर मुख्य अतिथि तिब्बत के ऐतिहासिक तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए वि.भा. विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. ज्योति लाल उरांव ने सन 1949 में हुए तिब्बत पर चीन के हमले की तीखी भर्त्सना की। उन्होंने कहा कि सामरिक, सांस्कृतिक व धार्मिक दृष्टि से तिब्बत के हित में भारत का हित सन्निहित है। बतौर अध्यक्ष भारत–तिब्बत मैत्री संघ के अध्यक्ष बैजनाथ प्रसाद ने अपने संबोधन में कहा कि संसार के वे 72 देश जो शांति प्रिय हैं, वे विश्व शांति बंधु दलाई लामा यानी ज्ञान के समंदर का जन्म दिवस उत्साह पूर्वक मनाते हैं। उन्होंने डॉ. भीमराव अंबेडकर, सरदार पटेल, जवाहर लाल नेहरू और आर के करंजिया के तत्कालीन बयानों के हवाले से कहा कि स्वतंत्र भारत 1962 में चीनी हमलों से परेशान हो गया था। उस दौर में उसे अपनी भूल का एहसास हुआ था कि तिब्बत पर चीनी आक्रमण के दौरान भारत ने ईमानदार भूमिका नहीं निभाई थी। नतीजतन 85,000 तिब्बती दलाई लामा के नेतृत्व में निर्वासित होकर भारत पहुंचे थे। समारोह में सांसद महावीर लाल विश्वकर्मा, विहिप नेता डॉ. बी के सिंह, खादी ग्रामोद्योग प्रबंधक सतीश कुमार सिंह, कांग्रेस नेता अशोक देव, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष भैया बांके बिहारी प्रसाद और संगीत शिक्षक दुबे जी सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे।

इस फोटो प्रदर्शनी में 1959 में परमपावन दलाई लामा के भारत आगमन के बाद से अब तक उनके तथा तिब्बती शरणार्थियों के पचास वर्ष से अधिक के निर्वासन काल के महत्वपूर्ण दुर्लभ चित्रों को भारतीयों की जानकारी के लिए शामिल किया गया।

ढहने के कगार पर बांध, क्विंघई–तिब्बत रेलवे को खतरा

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 9 जुलाई)

चीन की सरकारी न्यूज एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक तिब्बत के आमदो क्षेत्र, क्विंघई के पास स्थित एक जल विद्युत परियोजना का बांध ढहने के कगार पर पहुंच गया है। इससे क्विंघई–तिब्बत रेलवे को नुकसान पहुंचने का खतरा पैदा हो गया है। यह जलाशय रेलवे केंद्र से 40 किमी दूर है। ग्रामीणों ने गोलमुड सिटी के एक केंद्र के पास वेनकुआन जलाशय के दीवारों में कई जगहों पर लीकेज देखा है। इस बांध का निर्माण चार साल पहले चीन ने किया था। स्थानीय म्युनिसिपल सरकार के अनुसार अब खतरा यह है कि बांध के टूटने से आसपास के आबादी इलाकों में करीब चार मीटर की ऊंचाई तक पानी फैल सकता है। इस इलाके में 2,05,700 लोग रहते हैं। इससे पावर प्लांट पर भी खतरा मंडरा रहा है। शिन्हुआ की खबरों के मुताबिक इस जलाशय की देखरेख बेहद खराब तरीके से हुई है, क्योंकि यह सूखा प्रभावित इलाके में पड़ता है। जलाशय में क्षमता से दोगुना जलसंचित है। प्रांतीय सूखा राहत और बाढ़ नियंत्रण विशेषज्ञ बताते हैं कि जलाशय की क्षमता मजह 70 मिलियन क्यूबिक मीटर है, जबकि वास्तव में इसमें 230.8 मिलियन क्यूबिक मीटर से ज्यादा पानी संचित है। जलाशय का जलस्तर निंरतर प्रति घंटा एक सेंटीमीटर की गति से बढ़ रहा है, क्योंकि पास के पर्वतों पर तापमान बढ़ने से बर्फ पिघल रहा है।

गौरतलब है कि एबीएस स्कूल के विद्यार्थियों ने परमपावन को ग्रीटिंग कार्ड भी भेजे थे। स्कूल के प्रिंसिपल ने विद्यार्थियों, शिक्षकों और कार्यकारी परिषद के सदस्यों की तरफ से अलग से पत्र लिखकर दलाई लामा को उनके सुखी एवं समृद्ध जीवन के लिए शुभकामना दी।

कोर ग्रुप फॉर टिबेटन कॉज ने परमपावन दलाई लामा का 75वां जन्म दिन मनाया

(सलुगरा, 7 जुलाई) : सलुगरा के श्रीकालचक्र फोडंग और एचबीसी स्कूल के बुद्ध जयंती हॉस्टल सम्मेलन हॉल में 6 जुलाई को परमपावन दलाई लामा का 75वां जन्म दिन काफी धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 9.30 बजे दीप प्रज्ज्वलन से हुई। इसके बाद भिक्षुओं ने सांगसोल पूजा और प्रार्थनाएं की। परमपावन की गद्दी को खाता (स्कार्फ) भेंट किया गया। इसके अलावा आमंत्रित भिक्षुओं और विद्यार्थियों के बीच बर्थडे केक के टुकड़े बांटे गए और उन्हें मक्खन वाली चाय एवं डेसिल भी दिया गया। कोर ग्रुप फॉर टिबेटन कॉज के उत्तर–पूर्व क्षेत्र–1 के संयोजक श्री सोनम लुनदुप लामा ने अपने भाषण में सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए इस दिन की महत्ता पर प्रकाश डाला। इसके बाद एचबीएस स्कूल के प्रधानाचार्य डी पी भर ने अपने संक्षिप्त भाषण में इस बात पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार परमपावन दलाई लामा दुनिया भर में शांति और प्रेम का संदेश फैला रहे हैं और इस वजह से ही उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया। कई अन्य स्वयंसेवी संगठनों के लोगों ने भी परमपावन के जीवन और गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में सभी आमंत्रित लोगों का धन्यवाद दिया गया। कार्यक्रम के बाद वृक्षारोपण किया गया जिसके बारे में परमपावन भी सलाह देते रहे हैं। एबीएस स्कूल के प्राइमरी विंग के विद्यार्थियों में एक पेटिंग प्रतियोगिता और स्कूल के चार हाउस के बीच एक फुटबॉल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस पर बच्चों द्वारा एक गीत एवं नृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। गौरतलब है कि एबीएस स्कूल के विद्यार्थियों ने परमपावन को ग्रीटिंग कार्ड भी भेजे थे। स्कूल के प्रिंसिपल ने विद्यार्थियों, शिक्षकों और कार्यकारी परिषद के सदस्यों की तरफ से अलग से पत्र लिखकर दलाई लामा को उनके सुखी एवं समृद्ध जीवन के लिए शुभकामना दी।

इसके बाद बौद्ध भिक्षुओं ने प्रार्थना की। इस कार्यक्रम में करीब 60 स्थानीय विद्वान और 30 तिब्बती नागरिक शामिल हुए।

परमपावन के 75वें जन्मदिन पर कार्यक्रम का आयोजन

भारत–तिब्बत मैत्री संघ मैसूर द्वारा शहर के रोटरी वेस्ट ऑडिटोरियम में परमपावन दलाई लामा के 75वें जन्मदिन के अवसर पर 7 जुलाई को "तिब्बत दिवस की उम्मीद" नाम से एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों में मुख्य वक्ता प्रोफेसर सी के एन राजा, दक्षिण भारत के कोर ग्रुप फॉर टिबेटन कॉज के संयोजक श्री पी के देवैया, निर्वासित तिब्बती सरकार के दक्षिण भारत के मुख्य प्रतिनिधि ताशी फुंसोक, मैसूर पश्चिम के रोटरी अध्यक्ष डॉ. एम के सच्चिदानंदन, भारत–तिब्बत मैत्री समाज के अध्यक्ष ग्रुप कैप्टन (रिटायर्ड) एच राजगोपाल शामिल थे। कार्यक्रम की शुरुआत परंपरागत तिब्बती दीप प्रज्ज्वलन और अतिथियों द्वारा परमपावन दलाई लामा के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुआ। इसके बाद बौद्ध भिक्षुओं ने प्रार्थना की। इस कार्यक्रम में करीब 60 स्थानीय विद्वान और 30 तिब्बती नागरिक शामिल हुए।

दलाई लामा का जन्म दिन मनाया

यूथ लिबरेशन फ्रंट ऑफ टिबेट, ईस्ट तुर्किस्तान, मंचूरिया, एंड इनर मंगोलिया के सहयोग से कटेवड़ा गांव में तिब्बती आध्यात्मिक गुरू दलाई लामा का जन्म दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह का उद्घाटन निगम पार्षद व ग्रामीण समिति के अध्यक्ष नारायण सिंह ने किया। इस मौके पर यज्ञ का आयोजन किया।

क्या विकास से तिब्बती जीवन पद्धति नश्ट हो रही है

डैमियन ग्रैमटिकास, बीबीसी न्यूज, ल्हासा

(तिब्बत के ऊंचे पहाड़ों पर यह आशंका गहरा रही है कि एक प्राचीन जीवन पद्धति धीरे–धीरे नश्ट हो रही है)

चीन तिब्बत का विकास कर रहा है, उसे बदल रहा है, उसे आधुनिक बनाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन कुछ तिब्बतियों को इस बात की चिंता है कि उनके इलाके की विशिष्ट पहचान धीरे – धीरे मिट रही है। हमने चीन नियंत्रित तिब्बत का एक दुर्लभ दौरा किया। हमारा पूरा कार्यक्रम और आवाजाही पूरी तरह सरकारी अधिकारियों के नियंत्रण में था जो अपनी मर्जी से शायद ही कुछ देखने दे रहे थे। हमने जितने भी लोगों से बात की वे शायद चीनी नजरिए से तिब्बत दिखाने के लिए रखे गए थे।

बढ़िया वेतन

तिब्बत में चीजें कितनी बदल रही हैं इसकी एक झलक हमें ल्हासा से चार घंटे ड्राइविंग की दूरी पर स्थित 5,100 मिनरल वाटर कारखाने से मिल गई। ब्रांड का यह अनूठा नाम इस वजह से रखा गया है क्योंकि यह जिस हिमनद(ग्लेशियर) से पानी हासिल करता है वह समुद्र तल से 5,100 मीटर (करीब 16,700 फुट) पर स्थित है। जर्मनी से आयातित प्रोडक्शन लाइन से बड़े पैमाने पर यहां बोतलों में पानी भरा जाता है। पानी के यह बोतल चीन के सुदूरवर्ती शहरों तक में बेचे जाते हैं। इस कारखाने से एक गरीब इलाके में नौकरियां और धन आया है। यहां करीब 150 तिब्बती काम करते हैं जिनमें पुबु झाक्सी भी शामिल हैं। पुबु कहते हैं कि काम बहुत कठिन नहीं है और वह एक माह में 5,000 रेनमिनबी (करीब 735 डॉलर) वेतन पाते हैं जो तिब्बत के लिए एक अच्छा वेतन है।

लेकिन सब कुछ इतना सामान्य नहीं है। यह कारखाना हांगकांग में पंजीकृत एक कंपनी द्वारा चलाया जा रहा है, इसलिए मुनाफा और पानी, दोनों तिब्बत से बाहर जा रहे हैं। हालांकि कारखाने के अधिकारियों का कहना है कि ग्लेशियर से पानी लेने में पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं हो रहा है, लेकिन यह पानी घाटी की एक नमभूमि से लिया जाता है जो याक के पर्वतीय घास चरने की जगह है।

प्राचीन ढांचा

ल्हासा में भी हर जगह बदलाव के लक्षण दिख रहे हैं। शहर के सबसे ऊंचे हिस्से पर स्थित पोटाला महल दलाई लामा के निर्वासन से पहले उनका घर हुआ करता था। यह शताब्दियों से एक प्रतीक की तरह है। तिब्बती इस पर किसी भी बाहरी प्रभाव का विरोध करते रहे हैं। लेकिन अब महल के आंगन में चीनी आगंतुक भरे रहते हैं। वे तिब्बती घुड़सवारों का हैट लगाए घूमते हैं। चीन के विकास योजना का पर्यटन भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पोटाला महल के निदेशक क्विंगबा गेसांग कहते हैं कि चार साल पहले हर साल 3,70,000 पर्यटकों को महल के दर्शन की इजाजत थी, अब यह संख्या बढ़ाकर 6 लाख कर दी गई है। उनका कहना है कि यह इस बात का प्रमाण है कि चीनी अर्थव्यवस्था विकास कर रही है और तिब्बती भी धनी होते जा रहे हैं। हालांकि, वह इस बात का साफ जवाब नहीं दे पाए कि दर्शकों की बढ़ती संख्या से इस प्राकृतिक ढांचे पर कोई विपरीत असर तो नहीं पड़ रहा।

कितना आराम है इन घरों में

तिब्बत में प्रवासियों और पर्यटकों के रूप में हान चीनी लोगों की बढ़ती संख्या वहां के लिए चेतावनी वाली बात है। हर तिब्बती चरवाहे और किसान को नए घर में भेजने की चीन सरकार की नीति के भी खतरे हैं। हमें इसी तरह का एक मॉडल प्रोजेक्ट ल्हासा के बाहर दिखाया गया। ग्रे स्टोन से बने मकानों की सुंदर कतार दिख रही थी जिनके शिखर पर तिब्बती धर्म ध्वज भी फहरते हुए दिख रहे थे। चीन सरकार का कहना है कि उसने 13 लाख तिब्बतियों के लिए पिछले चार साल में ऐसे 2,30,000 कथित "आराम घर" बनाए हैं। सरकार इन मकानों पर आने वाली लागत की भरपाई के लिए अनुदान देती है। लेकिन इस अनुदान से ही मकान नहीं बन जाता, तिब्बतियों को अपनी बचत का धन लगाना पड़ता है और लोन भी लेने पड़ते हैं।

हमें यह पता चला कि इस गांव के बहुत से तिब्बती लोगों ने धन जुटाने के लिए चीनी प्रवासियों

लेकिन सब कुछ इतना सामान्य नहीं है। यह कारखाना हांगकांग में पंजीकृत एक कंपनी द्वारा चलाया जा रहा है, इसलिए मुनाफा और पानी, दोनों तिब्बत से बाहर जा रहे हैं। हालांकि कारखाने के अधिकारियों का कहना है कि ग्लेशियर से पानी लेने में पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं हो रहा है, लेकिन यह पानी घाटी की एक नमभूमि से लिया जाता है जो याक के पर्वतीय घास चरने की जगह है।

तिब्बत में चीन सबसे ज्यादा अरबों डॉलर का निवेश रेलवे में ही कर रहा है और इस इलाके को चीन के अन्य इलाकों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। एक ट्रेन आती है और प्लेटफॉर्म यात्रियों से भर जाता है। इनमें चीनी प्रवासी, सामान का बंडल लिए तिब्बती, लाल टोपी पहने पर्यटक चीनियों का समूह और कई विदेशी पर्यटक दिख रहे थे। हमें बताया गया कि यहां हर दिन करीब 3,000 यात्री आते हैं। इस प्रकार हर साल यहां करीब 10 लाख यात्री आते हैं जिनमें से एक तिहाई पर्यटक होते हैं।

को अपने खेत पट्टे पर दे दिए हैं। ऐसे खेतों को हासिल कर लेने वाले चीनी सब्जियां उगा रहे हैं और उनके असल मालिक तिब्बती ल्हासा की कई निर्माण परियोजनाओं में मजदूरी कर रहे हैं। इस प्रकार तिब्बत की जनसंख्या संरचना में भारी बदलाव आ रहा है।

एक ऐसे ही मकान में हमें डो बु जी मिले। सत्तर साल के करीब हो चुके डो ने बड़े ही स्टाइल में भूरे रंग का हैट लगा रखा था। हमने देखा कि उनके घर की दीवार पर चीन के कम्युनिस्ट नेताओं माओत्से तुंग से लेकर हू जिनताओ तक के पोस्टर लगे हुए थे। ऐसा हमने सभी घरों में देखा। इसके नीचे एक बड़ा सा टीवी सेट रखा हुआ था। डो बु जी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं और तिब्बतियों के लिए हाउसिंग परियोजना के प्रबल समर्थक हैं। उन्होंने कहा, 'हमारे पुराने मकान मिट्टी से बने हुए थे और अच्छे नहीं थे। मैं एक साधारण किसान था, लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी हम सब का देखभाल करती है।" चीन सरकार यह मानती है कि उसकी नीतियों से उस तिब्बत में बदलाव आ रहा है जिसे सरकारी अधिकारी पिछड़ा इलाका बताते हैं। लेकिन जहां कुछ तिब्बती इसका फायदा ले रहे हैं, ज्यादातर इससे संतुष्ट नहीं हैं। उनका कहना है कि आर्थिक फायदा काफी हद तक चीनी प्रवासियों को हो रहा है। तिब्बतियों का यह भी कहना कि उनके जीवन पद्धति और सांस्कृतिक पहचान पर खतरा मंडरा रहा है।

रेल मार्ग का विकास

तिब्बत में चीनियों की बढ़ती संख्या एक संवेदनशील मसला बन गया है। जब मैंने अपनी तिब्बत यात्रा से पहले बीजिंग में चीनी अधिकारियों से इस बारे में जानकारी चाही तो मुझे इस बात पर लंबा–चौड़ा भाषण पिलाया गया कि किस तरह से विदेशी पत्रकार तिब्बत के बारे में पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग कर रहे हैं। फिर मुझे बताया गया कि ऐसे आंकड़े मौजूद नहीं हैं। लेकिन ल्हासा में हमें एक नए रेलवे स्टेशन ले जाया गया। यह एक विशाल, आधुनिक इमारत है जो बिल्कुल खाली दिख रही थी। इसे बिल्कुल पोटाला महल की तर्ज पर बनाया गया है। तिब्बत में चीन सबसे ज्यादा अरबों डॉलर का निवेश रेलवे में ही कर रहा है और इस इलाके को चीन के अन्य इलाकों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। एक ट्रेन आती है और प्लेटफॉर्म यात्रियों से भर जाता है। इनमें चीनी प्रवासी, सामान का बंडल लिए तिब्बती, लाल टोपी पहने पर्यटक चीनियों का समूह और कई विदेशी पर्यटक दिख रहे थे। हमें बताया गया कि यहां हर दिन करीब 3,000 यात्री आते हैं। इस प्रकार हर साल यहां करीब 10 लाख यात्री आते हैं जिनमें से एक तिहाई पर्यटक होते हैं। अपनी पांच दिवसीय यात्रा में हम जितने भी तिब्बतियों से बात कर पाए उससे यह बात तो साफ हो गई कि यहां बड़ी संख्या में आने वाले हान चीनियों को लेकर असंतोष है।

चीनी बनाम तिब्बती भाशा

एक और संवेदनशील मसला तिब्बती भाषा को बचाने को लेकर है। तथाकथित तिब्बत शंघाई प्रायोगिक स्कूल (यह शंघाई सरकार के धन से बना है) में एक कक्षा लाल और सफेद ट्रैकसूट पहने विद्यार्थियों से भरी हुई थी, लेकिन सभी को चीनी भाषा में पढ़ाया जा रहा था। हमें यहां बताया गया कि यहां किसान और चरवाहा परिवारों के करीब 900 बच्चे पढ़ते हैं। कई बच्चों को पढ़ने के लिए चीन की केंद्रीय सरकार से वजीफा मिलता है। यह चीन सरकार की एक और दिखाने लायक परियोजना है। हालांकि, स्कूल का कहना है कि तिब्बती पढ़ाना प्राथमिकता है, लेकिन गहरी नजर डालने पर हमें ऐसा कुछ दिखा नहीं। आधे शिक्षक चीनी हैं और तिब्बती भाषा के अलावा अन्य सभी विषयों की पढ़ाई चीनी माध्यम से होती है। तिब्बती भाषा के अलावा अन्य सभी विषयों की परीक्षा में जवाब चीनी भाषा में ही लिखने होते हैं। यहां तक कि स्कूल में जगह–जगह लगे साइनबोर्ड और कक्षाओं के नाम भी चीनी में लिखे हुए थे। पाठ्यक्रम भी चीनी भाषा में थे। हमें पता चला कि बच्चों को यह पढ़ाया जाता है कि दलाई लामा चीन की सुरक्षा के लिए खतरा हैं। यह बात तो साफ है कि विकास के चीनी अभियान से तिब्बत में बदलाव आ रहा है, लोगों की आय बढ़ रही है, जीवन स्तर में बदलाव आ रहा है, लेकिन ऐसा लग रहा है कि यह सब तिब्बतियों को पसंद नहीं आ रहा। हमें अपनी यात्रा से ऐसा लगा कि चीन यह सब फायदे पहुंचाकर आम तिब्बतियों को अपने समर्थन में खड़ा करने की कोशिश कर रहा है और कई पीढ़ियों के बाद तिब्बतियों की यह जन्मभूमि निश्चित रूप से बदल सकती है।